शाह लतीफ

कल्याण बू० आडवाणी

MT
891.410 92
Sh 13 A

भारतीय
साहित्यक

MT
891.41092
Sh 13A

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धाधनक दरबारक ओहि दृश्यकेँ देल गेल अछि जाहि में तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय-रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान [जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या के लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

शाह लतीफ

लेखक

कल्याण बू० आडवाणी

अनुवादक

नवीन चौधरी

साहित्य अकादेमी

Shah Latif : Maithili translation by Navin Chaudhary of K. B. Advani's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1985),
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.410 92 Sh 13 A
00117150

प्रथम संस्करण : 1985

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029
29, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

MT
891.410 92
Sh 13 A

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

मुद्रक
संजय प्रिंटर्स,
दिल्ली 110032

Indian I...
117150
9.12.04
SHIMLA

विषय-सूची

आमुख	7
कविक जीवन-वृत्त	9
कविक व्यक्तित्व आ जीवन-पद्धति	23
भाषा शैली आ जनपदीय वस्तुक निर्वाह	28
आचार-नीति आ भक्ति	36
प्रेम, रहस्यवाद आ अनुभूति	40
व्यापार, वाणिज्य आ सम्पत्ति	46
कथन-कला	50
कथा सभक प्रतीकवाद	53
सन्दर्भ-ग्रन्थ	59

आमुख

सिन्धक सूफी कविगण मे शाह सभ सँ पैघ आ सभ सँ महान छथि। ओ विश्वक ओहि महानतम कवि सभ मे छथि जनिक नाम 'काल पोथी' मे स्थायी रूप सँ अंकित अछि। ओ द्रष्टा आ सिद्ध पुरुष छलाह, हुनक काव्य दिव्य सत्यक मोती थिक। हुनक रिसालो पुनीत पोथी आ सिन्धी भाषाक अपूर्व निधि थिक।

शाहक संत स्वभाव, सहज कल्याणकारी प्रवृत्ति, निर्मल चरित्र आ सद्‌गुण सभ हुनका सिन्धी हृदय मे प्रतिष्ठित कैने अछि, हुनक काव्य अपन प्रत्येक पाठक कें संवेदित करैत अछि।

शाह लतीफ आ हुनक काव्यक प्रसंग एहि पोथी मे जे किछु कहल गेल अछि, ताहि सँ बेसी एहि ठाम वक्तव्य नहि। ऋषि दयारामक ओ पाँती सभ उधृत करबा लेल ई शुभ अवसर थिक, जाहि मे ओ माननीय कवि के श्रद्धांजलि देने छथि :

'स्फटिक सरिता-जकाँ गतिमान छल प्रतिभा हुनक,
ज्योति सन आभामयी, स्वच्छ छल पवनहि सन।'

हुनका मे तेहेन व्यापक करुणा आ सुतीक्ष्ण मेधा छलनि जे हुनक काव्य ज्ञानी-अज्ञानी, हिन्दू-मुस्लिम सभ लेल आनन्द आ भरसाहा बनल अछि। महान गीतिकार हाफिज कें इरानक पेट्रार्क आ अब्दुल लतीफ कें सिंधक हाफिज कहल गेल अछि। मुदा पेट्रार्क आ हाफिज एहि सिन्धीक कवि केर किछु धारणा देबा मे सफल नहि होइत छथि। अब्दुल लतीफ सुन्दर राष्ट्रीय गाथा आ अति व्यापक सत्य कें एक ठाम आनि तेहन आभा आ विमलता, कोमलता-कारुणिकता देने छथि जकर समतुल्य विरल आ ओहि सँ नीक नहि होइत छै। हुनक रचने सभ नहि, जीवन सेहो संगीतमय छलनि। हुनक जीवन तेहन पावन आ निर्मल छलनि जे प्लेटो हुनका 'आदर्श गणतंत्र' सँ फराक रखबाक विचार प्रायः छोड़ि दितथि जाहि मे सर्व कला-सम्पन्न कवि सभक स्थान नहि छलनि। ओ तुकबन्दी कैनिहार नहि, वास्तविक अर्थ मे कवि छलाह—आभामय शक्तिमय—आ सर्वोपरि संत कवि।

ई पोथी लिखबाक भार देलक ताहि लेल हम साहित्य अकादमीक आभारी

छी, एहि लघु पोथी मे हम शाहक जीवन, दर्शन आ काव्यक अनिवार्य पक्ष सभक विवेचनक प्रयास कैल अछि, संक्षेप मे। हम एकर परिभाषित सीमाक अधीन रहलहुँ। हम आशा करैत छी जे कविक व्यक्तित्व आ कृतित्व पर एहि सँ पैघ पोथी निकट भविष्य में प्रकाशित हैत।

14, सिंधी कॉलनी
25 म रस्ता
वान्द्रा
वम्बई 50

—कल्याण आडवाणी

कविक जीवन-वृत्त

शाह अब्दुल लतीफ भिटाईक जन्म हिजरी सन 1102 (1689-90 ई०) मे हैदराबाद जिला केर हाला तालुका मे हाला हवेली गाम मे भेल छलनि। लौंग फकीरक वनवाओल एक टा साधारण मस्जिद छोड़ि आब ओहि गामक किछु अवशेष नहि छैक। मस्जिद ओतहि अछि जाहि ठाम कविक जन्म भेल छलनि। खैरपुर रियासतक सीमान्त पर कतहु लौंग फकीरक कब्र छनि। कविक जन्मक बाद हुनक पिता हबीब शाह हाला हवेली सँ कोटड़ी आबि गेलाह। कोटड़ी गाम भिट (जतए कवि रहैत आ प्रार्थना करैत छलाह से टीला) सँ चारि मील पर छल। ओहि गामक आब किछु ढहल-ढनमनाएल घर सभ छै।

पाक पैगम्बरक कुल मे जनमल शाह लतीफ सैयद छलाह हिनक पुरखा सभ हिरात निवासी। मीर हैदर शाह एक बेर हाला आएल छलाह। हाला मे शाह मुहम्मद हालीक कन्या सँ हुनक बिआह भेलनि।

मीर हैदर हाला आगमनक तीन साल आठ मास बाद अपन पिताक देहान्तक समाचार सुनलनि। मीर अपन जन्म भूमि गेलाह। हुनक विदा होइतहि हुनक पत्नी एक नेनाक जन्म देलनि, जकर नाम हुनक निर्देशानुसार मीर अली राखल गेल। कविक प्रपितामह आ सम्मानित सूफी कवि शाह अब्दुल करीम मीर अली केर वंशज छलाह। शाह लतीफक पिता हबीब अल्लाह शाह सैयद अब्दुल कुद्दूस शाहक पुत्र आ सैयद जमाल शाहक पौत्र छलाह। सैयद शाह अब्दुल करीमक तेसर पुत्र सैयद जमाल शाह। शाहक माए 'मखदूम अरबी' मखदूम दयाणीक वंशक कन्या। ओ मज्जूब, अर्थात् 'भगवत्प्रेम मे बौराएल' छलाह। हुनक मकबरा आइ धरि पुरना हाला केर पूब मे अछि।

कहल जाइत अछि जे शाह अब्दुल लतीफक जन्म एक साधुक वरदान सँ भेल छलनि, हुनकहि इच्छा सँ नामकरण सेहो भेलनि। 'तुहफतुल-किराम' कहैत अछि जे कविक पिता शाह हबीब 'कामिल बुजुर्ग', धर्मनिष्ठ आ मनन-चिन्तनवला लोक छलाह। कहिओ काल मनन में डूबल रहने कोठरी मे अपन प्रिय पुत्रक उपस्थितिक सुधि नहि रहैत छलनि। शाह अब्दुल लतीफक शिष्य मीर अली काने ठट्ठवी हिजरी

सन 1181 (1767 ई०) मे, अर्थात् कविक महाप्रयाणक 15 साल वाद 'तुहफ-तुलकिराम' केर रचना कैलनि।

कहल जाइत अछि जे शाह हबीव अपन नेना कें भिट सँ छओ मील आ उडेरोलाल सँ चारि मील दूर वाई गामक आखूंद नूर मुहम्मद भट्टी केर ओहि ठाम शिक्षा लेल पठौलनि। शाह लतीफ 'आलिफ', वर्णमाला आ अल्ला शब्दक पहिल आखरक वाद किछु नहि पढ़लनि।

'एक आखर सीखू 'अलिफ' आन सभ ज्ञान विसरि जाउ।
पोथी कतेक उनटाएव, हृदय अपन पावन वनाउ॥"

जखन शाह हबीव सुनलनि जे हुनक नेना पहिल आखर 'अलिफ' केर वाद किछु सीखव नहि गछैत अछि, ओ विभोर भए नेना कें करेज सँ साटैत बजलाह: अहाँ सत्य पथ पर छी ई रहस्यमय सत्य हमरहु बूझल अछि, मुदा संसारिक रीति कें देखैत धर्मनिरपेक्ष शिक्षा सँ परहेज नहि कैल जाए। 'तुहफतुल-किराम' मे लिखल अछि जे शाह कोनो पाठशाला मे शिक्षा नहि लेलनि।

कवि 'उम्मी' अर्थात् निरक्षर छलाह: एहि प्रसंग दू मत अछि। जे विद्वान सभ हिनका 'अपन युगक अद्भुत साहित्यकार' मानैत छथि, अपन मत लेल कोनो विश्वसनीय प्रमाण देवा सं असमर्थ छथि। वेसी सँ वेसी, हुनका सभक निर्णय संदिग्धार्थक अछि। विख्यात यूरोपीय विद्वान डॉ० ट्रम्प, जे सभ सँ पहिने 'रिसालो' केर संकलन आ प्रकाशन कैलनि, अपन भूमिका मे लिखने छथि:

'कहल जाइत अछि ओ नहि पढ़लनि, जकर नीक जकाँ खंडन हुनक दीवान करैत अछि जाहि मे ओ अरवी, आ फारसीक गंभीर अध्ययन प्रदर्शित कैलनि।'

'मुकद्दमा-लतीफी (सिन्धी मे 'शाह-जो-रिसलो'क भूमिका) मे डॉ० गुरवख्शाणी लिखैत छथि: निश्चयपूर्वक कहल जाए सकैत आछि जे अपन युगक अनुसार अब्दुल लतीफ ज्ञानक सभ क्षेत्र मे पारंगत छलाह—अंशतः पाठशालाक शिक्षा सँ आ किछु स्वाध्याय आ व्यक्तिगत निरीक्षण सँ। ओ फारसी आ अरबीक विद्वान् छलाह, अपन मातृभाषा पर हुनका पूर्ण अधिकार छलनि। एतवे नहि, किछु सीमा धरि आन-आन भाषा, जेना वलूची, सराइकी, हिन्दी, पंजाबी आदि सेहो अबैत छलनि···लगैत अछि जे ओ कुरान आ हदीस, अध्यात्म आ दर्शन, सूफीवाद आ वेदान्त, वाक्य विन्यास आ व्याकरण आदि केर गम्भीर अध्ययन कैने छलाह। पाक कुरान, रूमीक मसनवी आ शाह करीमक रिसालो सदिखन हुनका संग रहैत छल। एहि तीनू पोथी सहित उपर्युक्त विषय सभ सँ उद्भूत वस्तु सभ हुनक काव्य मे अछि। ठाम-ठाम कुरानक किछु आयत आ मसनवीक वैत केर जेना शब्दशः अनुवाद कैने छथि···इ निर्विवाद प्रमाण थिक जे शाह लतीफ अपन युगक अद्भुत विद्वान छलाह···जे सुच्चा ज्ञान ओ सिखलनि से तेहने लोक सभ के होइत छैक। ओ ज्ञान प्राप्त करबाक एके टा उपाय छैं—प्रकृति आ पुरुषक सुन्दरता

महात्म्यक चिन्तन, आत्म-ग्रंथ कें पढव। निःसंदेह शाह यैह अध्ययन कैलनि आ तैं ओ कवि सभक शिरमौर छथि।

मिर्जा कलीच वेग अपन सिंधी पोथी 'शाह अब्दुल लतीफ भिटाई-जो-अहवाल' मे लिखने छथि : एतेक सुनिश्चित अछि जे कोनो पाठशालाक गुरुजी सँ किछु नहि सिखलनि, ओ जे किछु सिखलनि से भरिसक अपन ऊहि सँ। अरबी-फारसी मे ओ निष्णात छलाह। रिसालो मे कुरानक किछु आयत, हदीस आ आन अरबी सुभाषित सभ अछि, से सभटा उद्धरण तेहन सुसंगत जे गंभीर अध्ययन कैनिहार छोड़ि आन सँ संभव नहि। मुदा, कोनो प्रमाण नहि उपलब्ध अछि जे ओ पाठशाला जा कए किछु सिखने होथि। ओ लिखब सिखने रहितथि तँ हुनक हस्तलिपि मे किछु रहैत। तीन टा पोथीक पांडुलिपि हुनका संग रहैत छलनि-पाक कुरान, रूमीक मसनवी आ बुलड़ीक शाह करीमक रिसालो, एहि पोथी सभ पर हुनक कोनो प्रकारक हस्तलिपि नहि अछि ने पोथीक आवरण पर आ ने पात सभक रिक्त स्थान मे, जे कविक हस्तलिपिक नमूना होअए। पूर्ण विश्वास सँ कहल जा सकैत अछि जे पूर्ण पुरुष सभ के भगवान जे दिव्य ज्ञान दैत छथि, तकर थाह साधारण लोक कें नहि भेटैत छैं।

प्रो० जेठमल परसराम अपन पोथी 'शाह भिटाई-जी-हयाती' मे कहने छथि जे शाह अरबी आ फारसीक गंभीर अध्ययन कैने छलाह। प्रो० जेठमल रिसालोक अरबी-फारसी शब्द वैभवक दिस संकेत करैत छथि।

'शाह अब्दुल लतीफ ऑफ भिट' मे डॉ० सोरले लिखने छथि: विद्वान सभ लेल बुझौअलि अछि जे शाह लतीफक शिक्षा कतए धरि भेलनि। लोकप्रिय धारणा अछि जे हुनक शिक्षा कतहु नहि भेलनि, ओ अपनहि सभ किछु सिखलनि। ई जनश्रुति विश्वसनीय नहि अछि। हुनक काव्य मे तत्कालीन स्तर सँ बेसी अरबी आ फारसीक ज्ञान प्रदर्शित अछि। एतेक निश्चित अछि जे ओ जलालुद्दीन रुमीक रचना सँ परिचित छलाह। हुनक काव्य मे जे सूफीवाद अछि से इस्लाम केर रहस्यवादी विकास केर गंभीर आ सहानुभूतिपूर्ण बोध, जे भारत मे फारसीक महाकवि सभक रचनाक माध्यम सँ आएल, छोड़ि कहिओ नहि भए सकैत छल। शाह लतीफक शिक्षाक प्रसंग आर जे तथ्य होइक (वीर पूजाक नीक नमूना अछि लोकक ई विश्वास जे दिव्य ज्योतिक रूप मे हुनका सभ टा ज्ञान भेटलनि) एतेक-धरि स्पष्ट अछि जे हुनक शिक्षा अनावश्यक नहि छल।

मियाँ दीन मुहम्मद वफाई अपन सिन्धी पोथी 'लुत्फ-अल-लतीफ' मे लिखने छथि: हुनक काव्य मे एहेन सौष्ठव आ गरिमा अछि जे केओ नहि पतिएतइ जे शाह साहेब निरक्षर आ साधारण लोक छलाह, किन्तु जनिका सभ कें बूझल छनि जे आत्मशुद्धि आ तप सँ ओहि रहस्य सभक उद्घाटन होइत छैक जाहि सँ साधारण लोक सभ अनभिज्ञ रहैत अछि तनिका सभ कें विश्वास हेतनि जे प्रभु एहेन

अशिक्षित व्यक्ति कें ओ ज्ञान-धन दैत छथि जाहि सँ विद्वान्-बुद्धिमान् सभक आँखि फाटैछ ।

शाहक समकालीन आ शिष्य सैयद मीर अली शेर काने ठट्टवी अपन फारसी पोथी 'मकालात-अल-शुअरा' मे लिखने छथि : ओना आदरणीय शाह साहेव अशिक्षित छलाह मुदा संसारक सभटा ज्ञान हुनका हृदयक गुप्त पट पर अंकित छल ।

उपर्युक्त विद्वान सभ मे किछु गोटे शाहक अरबी फारसी ज्ञान पर जोर देने छथि, आ ताही आधार पर निर्णय करैत छथि जे शाह विद्याध्ययन कैने छलाह । शाह शिक्षित छलाह, एहि मान्यता कें स्थापित करबा लेल हुनका सभक तर्क छनि: शाह जौं अशिक्षित रहितथि तँ हुनका लग रूमीक मसनवीक प्रति नहि रहैत सोनहुला आखर मे अंकित आ सोनहुला कोर वला हस्तलिपि जे हुनका सिंधक शासक नूर मुहम्मद कल्होड़ो देने छलनि । शाह कें रूमीक प्रति अगाध विश्वास छलनि, फारसीक एकमात्र सूफी कवि जकर उद्धरण ओ अपन काव्य मे देलनि । सचल सेहो 'मंतकुत-ताइर' केर यशस्वी कवि आ महान् सूफी अत्तारक शिष्य छलाह । अवैसी छलाह तँ संभव जे शाह कें रूमी सँ कोनो आध्यात्मिक सम्बन्ध छलनि (अवैसी फकीर सभ कें जीवित आ मृत गुरु सभ सँ आध्यात्मिक अनुग्रह प्राप्त होइत छनि) । फारस केर महान सूफीक 'मसनवी' जे ओ अपन संग रखैत छलाह से प्राय: रूमी लेल श्रद्धा केर कारण । ई सनेस रूमीक प्रति कविक विश्वासक कारण मियाँ नूर मुहम्मद देने छलनि । अपन रिसालो मे रूमी के छोड़ि शाह आन कोनो कविक उल्लेख नहि कएने छथि । छओ टा वैतक लड़ी मे ओ रूमी के तेना उद्धृत कैने छथि जे सनद होअए । उदाहरण लेल ओहि मे सँ एक टा देल जाइत अछि—

'समस्त सृष्टि हुनकहि तकैत अछि, ओ
सौंदर्यक उद्गम स्रोत छथि; रूमी भनैत छथि ।

कामदेवक बाण शाह सन लोक कें सेहो नहि छोड़लक । जखन बाण लगलनि तँ ओ बताह जकाँ बौआएल घुरथि, जेना हुमा आ हरिण बौआइत अछि, मजनू बौआइत छल, विरह तापित गान गबैत, प्रेमक पीड़ा मे प्रेमालाप करैत—

'कोइली केर कूक जकाँ रुदन भेल मरुथल मे,
कानब आ कलपब सभ प्रेमहिक थीक ।

प्रेम-बाण लगबा काल हुनक बयस बीस साल छलनि । शारीरिक प्रेम हुनका निर्मल बनाए अध्यात्मक ज्ञानक शिखर पर आनि देलक । ओ कहैत छथि :

हे माँ, जहिना धुनिआ तूर धुनैत अछि—
प्रेम हमरा तहिना धुनने अछि ।

अरगून राज परिवारक श्रीमन्त कोटड़ी निवासी मिर्जा मुगल बेग कविक

पिता शाह हबीबक एक शिष्य छलाह। हुनका परिवारक कोनो सदस्य जखन अस्वस्थ होअए, शाह हबीबक हवेली पवित्र करए आ अस्वस्थ व्यक्ति कें स्वास्थ्यक वरदान लेल बजाहटि होइत छलनि। मिर्जा परिवारक जनीजाति मे कठोर पर्दा प्रथा छलै'। सैयद सभकें छोड़ि आन पुरुष कें हवेलीक चौकठि टपबाक अनुमति नहि छलै। एक वेर मिर्जा मुगलक कन्या असक भेलि। पहिनहि-जकाँ शाह हबीब कें शिष्यक हवेली सँ बजाहटि भेलनि। संयोगवश शाह हबीब तखन अपनहु असक छलाह आ तैं अपन प्रतिभासम्पन्न पुत्र शाह अब्दुल लतीफ कें अपन प्रतिनिधि बनाए पठौलनि। कन्या नीक जकाँ कम्वल सँ झाँपल छलै, तैओ पूर्णिमाक चान जकाँ ओकर सुन्दरता झाँपल नहि रहलै। ओकरा देखिते शाह एकटा रहस्यमय आदन्द सँ विभोर भेल अपन हाथ मे ओकर आङुर पकड़ने जेना अचेत अवस्था मे वाजि उठलाह : जकर आङुर सैयदक हाथ मे होअए तकर किछु नहि बिगड़तै। ई सूनि मिर्जा मुगल आ ओकर सरोकारी सभक मुँह तामसें लाल भए गेलै तैओ ओ सभ संयत रहल आ अपन आध्यात्मिक गुरुक नेना कें किछु नहि कहलक। ओना तरेतर ओ सभ तेहन उपाय कैलक जे निरीह सैयद सभ कें कोटरी छोड़ि ओहि ठाम सँ किछु दूर उत्तर जा कए वास लेबए पड़लनि।

प्रेमोन्माद मे शाह आब मरुभूमि आ घाटी सभ मे मजनूं जकाँ बौआए लगलाह। एक वेर ततेक उन्मत्त भेलाह जे एकहि ठाम तीन दिन धरि वेसुध भेल पड़ल रहलाह। देह पर बालुक ढेरी भए गेलनि, मात्र कपड़ाक एकटा खूट देखल जाइत छल। संयोग सँ एक टा भेड़िहर देखलक आ कुहरैत शाह हबीब कें समाद कहलकनि।

समाद सुनिते कविक पिता ओहि ठाम जुमलाह आ व्यथित स्वर मे अपन नेना सँ कहलनि :

'बसातक विकट वेग मे अहाँक देह धूरा सँ झँपा गेल' एहि व्यथित स्वर सँ शाहक सुधि आपस भेलनि, ओ वाजि उठलाह :

'प्रियतमा कें देखवा लेल साँस धरि चलैत अछि।'

दूनू बापूतक मिलन क्षणिक भेलनि। एक दिन शाह अपन घर सँ रहस्यमय ढंग सँ बिला गेलाह। माए-बाप कें फेर विरह-व्यथा मे छोड़ि देलनि। लगैत अछि जे कवि ओहि दिन सँ संन्यासी सभक संग सिन्धक निकटवर्ती इलाका सभ मे भ्रमैत रहलाह। हुनक रिसालो मे लखपत आ गिरनार, जैसलमेर आ थर, गंजो आ हाड़ो, लाहूत आ लामकान, काबुल आ हिंगलाज आदि केर उल्लेख अछि। हुनका सभक संग तीन साल धरि भ्रमैत ओ अपन आत्मिक अनुभूति गाढ़ कैलनि। योगी सभक संग ओ हिंगलाज टा केर तीर्थयात्रा नहि कैलनि, द्वारकाक दर्शनो कैलनि :

'नाङट योगी सभ हिंगलाज गेलाह
द्वारका दर्शन सँ शैव सभ धन्य भेलाह।'

हिंगलाज पीठक मुसलमान मुजावर सभ हिंगलाजक देवी कें नानी कहैत छथि।

रिसालो देखबैत अछि जे शाह हैदराबाद (सिंध) क गंजो पहाड़ी होइत हिंगलाज गेल छलाह। लगैत अछि जे गंजो पहाड़ी पर हुनका आध्यात्मिक अनुभूति भेल छलनि; ओ गंजो कें भगवत्कृपाक स्रोत मानने छथि :

'गंजो पहाड़ी कें जे अछि चिन्हैत
पोथी-पतरा कें छोड़ि योगी बनैछ।
योगी सभक धूनी ओ ओतहु पजरैत देखलनि
जतए एकटा पंछी नहि जा सकैत अछि।
जतए कोनो पंछी केर चाङुरक छाप नहि
ओतहु पजरैत अछि धूनी
रमैत योगी कें छोड़ि के ओहि ठाम आगि जराओत'

योगक पथ कठिन आ कँटाह छै। शाह कहैत छथि :

'योग नहि सीखल भेल। योग हुनकहि सभ लेल छनि जे पैघ-पैघ रहस्य जोगौने छथि।'

लगैत अछि जे शाह कें कहिओ अपन एक योगी मित्रक वियोग भेलनि। ओ मित्र-जानि बूझि कए छोड़ि गेल छलनि अथवा परलोकवासी भए गेल छल। एहि वियोगावस्था मे शाह शोणितक नोर कानल छथि आ जेना एकसरुआ भए गेल छथि :

'हमर योगी मित्र सभ अपन कुटी मे नहि छथि
विरह वेदना सँ रातिभरि हमर आँखि झहरैत रहल
जनिका सभक लेल हृदय हमर आकुल अछि
ओ साधु संत सभ बिला गेलाह
नहि भेटैत अछि हुनका सभक कुटी मे
नव खढ़ आ पाथर
ओहि ठाम छाउर उड़िआइत अछि
शंख बजबैत ओ सभ यात्रा पर गेलाह।'

किछु विद्वानक मत अछि जे ई पाती सभ सूफी शहीद शाह इनायत शाह लेल कहल गेल जे 1133 हि० स० (1720 ई०) मे शहीद भेलाह जखन शाह लतीफ 31 सालक छलाह!

अपन योगी मित्र सभक सग जे ओ दुर्गम वाट सभ सँ यात्रा कैलनि से हुनका मनक ग्रंथि सभ सोझरएबा मे सहायके नहि भेल, हुनक काव्यक प्रेमाख्यान सभ लेल सामग्रीक जोगार कए देलकनि। हुनक गाथा—ससुई-पुन्हूँ, सूमल-राणो, सुहनी-मेहार, नूरी-जाम तमाची-सिन्ध आ लगपासक क्षेत्रक हुनक सूक्ष्म अवलोक-

नक साक्षी अछि। हिंगलाजक यात्रा ओ हैदराबाद (सिंध) केर गंजो टकर सँ कैने छलाह। ओही वाट मे हेलाया पहाड़ी, किंझर झील देखलनि आ प्रेम आ नम्रताक मुरुत जाम तमाची आ नूरी केर गान गाबए लगलाह। चारू कात मनोरम वन सँ वेढ़ल झील ओतहि पहाड़ी लग छै, जकर वर्णन एहि प्रकार अछि—

'नीचा पानि, फूल उप्पर मे, ठाढ़ चहू दिस सुन्दर वन,
जाम तमाची केर श्वसन सँ भेल सुवासित अछि कणकण,
उत्तर सँ सिहकैत बसात बना देलकै किंझर कें पलना।'

हेलाया पहाड़ी पर जाम तमाचीक खंडहर एखन धरि छै। कराचीक वाट मे ओ भंभोर नगर देखने छलाह जे हुनका ससुई आ ओकरा यातना सभ मन पाड़ि देलकनि :

'एहि नगर भंभोर मे हम नहि रहब क्षण एक
सखी ! पर्वत मध्य ताकब अपन प्रियतम कें।'

तकर वाद लगैत अछि ओ मेहदी लेल विख्यात मलीर गेल छलाह—

'हम मलीर जाए अंग अंग मेहदी लगाएव।'

मलीर सँ ओ कराची गेलाह जतए कलाचीक भयाओन जलावर्त्त देखलनि जकर वर्णन 'सुर घातू' में भेल।

'कलाच मे एकटा कहर अछि—जे ओहि मे जाइत अछि, आपस नहि होइत अछि।' कराची सँ विदा भए ओ पहिने हब नदी, तखन विंदुर पहाड़ आ ओही नामक नहर लग गेलाह, तकर बाद हाड़ो पहाड़ आ अंत मे हिंगलाज। हब नदीक कछेड़ मे ओ उज्जर पैर वाला हरिण 'रोझ' देखलनि।

'हब पर तकैत अपन प्रियतम् कें,
ओ (ससुई) राति कें देखलक 'रोझ'।

खोरिड़ोक राजस्व कार्यालय हब आ विंदुर केर बीच अछि, जतय लसबेला केर शासक दिस सँ कर लेल जाइत छै। रिसालो मे एकर उल्लेख अछि। विंदुरक यात्रा मे जे कष्ट भेल छलनि शाह तकर वर्णन कैने छथि—

'विंदुर जाए लेल अपन फांड़ बान्हि लिअ
होए जकरा डर से पहिनहि फराक होअए।'

विंदुरक बाद 'गुरु आ चेला' मरुभूमि छै। कहिओ एहि ठाम गुरु आ चेला पिआसल मरि गेल छलाह तैं एहेन नाम भेलै। एहेन दुर्गम वाट सँ ससुई छोड़ि आन के जाए सकैत छल ?

'प्रियतम लेल ससुई मरुथल अङेजत'

हाड़ो पहाड़ सँ होइत यात्रा सेहो बड़ कष्टकर आ जाँच सँ भरल बूझि पड़ैत अछि :

'हमरा नहि बूझल अछि ओ सभ (पुन्हूँ आ संगी)
कोना पार भेल हाड़ो।'

कराची सँ हिंगलाज 120 मीलक यात्रा दुर्गम नहि तँ कठिन अवश्य छै। शाह द्वारा प्रस्तुत जाओ, जमुर आ जर पर्वत श्रेणी आ लसबेलाक 'वणाकार' केर वर्णन सँ लगैत अछि जे ओ कलात जनपद सेहो गेल छलाह।

'वणकर केर पैघ-पैघ गाछ।
जतए जाओ, जमुर जर पहाड़ छै।'

सपड़ सखीक तीर्थयात्राक बाद लगैत अछि ओ लसबेला होइत कराची आ अंत मे लाहूत गेलाह—

'आबि गेल छथि योगी लाहूत'

सपड़ सखी लसबेला केर एक टा शासक छलाह जे अपन असीमित दानशीलताक कारण अमर छथि। एक बेर ओ एकटा कर्कश कंठ चारण कें एक सय बीछल अरबी घोड़ा देने छलाह। 'सुर प्रभाती' मे शाह एहि शासक आ एहि घटना के अमर बना देलनि।

'मूढ़ बनि कए याचना करू
राति सपड़ अहाँ लेल अरबी घोड़ा सभ फुटा देलनि
बेला केर शासक मान रखलनि ओकरो।
संगीतक ज्ञान नहि आखर भरि तकरो॥'

तीन साल धरि योगी सभक संग बौआइत शाह विपुल अध्यात्म-सम्पदा जमा कैलनि। तकर बाद केओ साधु भरिसक हुनका एक ठाम रहि कए दिव्य स्वरूपक ध्यान करबा लेल कहलकनि :

'पर्वत प्रदेशक राजकुमार (पुन्हूँ) ओहि ठाम नहि छथि,
जतए कल्पना करी अहाँ छथि ओ
पाथर केर कथा नहि सूनू
अपनहि अहाँ 'वणकार' (हुनक निवास) छी
आन सभ सँ फराक भए
अपनहि सँ पूछू प्रियतम केर ठेकान।'

किछु विद्वानक मत छनि जे योगी सभक किछु रीति-पद्धति निमाहए सँ शाह अनिच्छुक छलाह तैं हुनक संग छोड़ए पड़लनि। तखन प्रश्न उठैत अछि जे ओ योगी सभक संग छोड़ि देलनि वा योगी सभ हुनका बैला देलनि ? स्वभावतः शाह कें ककरहु सँ कोनो विरोध नहि होइत छलनि। साधु सभक तेहन किछु भेल होनि से कल्पना नहि कैल जाए सकैछ। वस्तुतः जीवन भरि शाह हुनका सभक गुणगान करैत रहलाह।

हिंगलाज सँ आपस होइत काल संभवतः ओ मुगलभीन, लखपत, हालार,

पोरबंदर, जूनागढ़, गिरनार आ खम्बात गेल छलाह। ठट्ठा (सिंध) मे ओ मखदूम मुअयन, जनिका मखदूम तारो सेहो कहल जाइत छलनि, आ आन साधु सभक संगति कैलनि।

सुर सामूंडी, सुर श्री राग, सुर सोरठ आ सुर खम्बात हुनक एहि यात्राक अनुभूति सभक फल थिक। लगैत अछि अपन जन्मभूमि आपस होइत काल ओ जैसलमेर आ थर गेल छलाह। 'सुर मारूइ' मे थरी वनस्पति, पशु-पंछी आ लोक जीवन केर प्रामाणिक विवरण अछि। संभव अछि जे जैसलमेर सँ पाँच मील दूर आ काक नहर सँ सटल लुडाणो पहाड़ी ओ देखने होथि। लुडाणो पहाड़ी पर मूमल तिलिस्मी महल बनौने छल जाहि ठाम सुमल कें प्राप्त करवा लेल अपस्याँत राजकुमार सभक दुखद अंत भेल छलनि। अन्त मे राणो ओहि भयावह तिलिस्म सभकें पार कए सुमल कें प्राप्त कैने छल।

ठट्ठा सँ आपस होइत काल शाह एक गुफा मे ककरो कुहरब सुनलनि। ओहि ठाम जा कए देखलनि एक गोटे करुण स्वर मे रटैत छल :

'हम प्रियतम कें तकबा लेल एकसर चलि जैब।'

कवि जिज्ञासा कैलनि तँ ओ बाजल, 'ओ ऊँटक चरवाह छल। भिट (शाहक निवास स्थान) वाटे जाइत काल ओ फकीर (शाहक चेला) सभक मुँहे ओ पाती सुनने छल। संतकवि ओकरा कहलनि—

'अहाँक इच्छा होअए तँ हम शेष दूनू पाती कहब।'

ऊँटवानक मुँह पर खुशी छिटकलै जखन शाह दोसर पाती कहलनि—

'बाट मे मृत्युक पिजड़ा सन पहाड़ सभ छै···'

ऊँटवान वेसुध भेल कवि सँ वैत पूरा करबा लेल अनुरोध करए लागल। शाह अंतिम पाती पढ़लनि :

'प्रिय मिलन केर आकुलता मन मे रहत,
ककरो संग नहि हमरा चाही।'

दोहाक अन्तिम आखरक उच्चारण होइतहि ऊँटवानक प्राण छूटि गेलै। शाह के असीम दुःख आ आश्चर्य भेलनि। डॉ० गुरबक्शाणी अपन भूमिका मे लिखने छथि : तखन ओ ओकरा ओतहि गाड़लनि। ओहि बाट सँ जाइत लोक आइ धरि ओ कब्र देखैत अछि। ओहि दिन सँ शाह बजैत रहलाह जे ऊँटवान सन निष्ठावान प्रेमी ओ कतहु नहि देखलनि।

कविक पिता शाह हबीब एतेक दिनक पुत्रक अनुपस्थिति मे विरह-कातर भए गेलाह। ओ दिन-राति अपन प्रिय पुत्र अब्दुल लतीफ कें सकुशल आपसीक लेल प्रभु सँ प्रार्थना करैत छलाह, मखदूम नूह केर दरगाह जाए दुआ माङथि। एक दिन, अनचोके, चुपचाप शाह अपन माए-बापक घर आवि गेलाह। एक बेर फेर याकूब कें अपन हेराएल यूसुफ भेटलनि आ आनन्दक एक क्षण मे चिर विरह बिला गेलै।

आपस भेलाक बाद लगले हुनक बिआह ओहि सुन्दरी सँ भेल जकरा लेल तीन साल धरि ओ मजनूं जकाँ पहाड़-पहाड़ी भरुभूमि-घाटी सभ मे बौआइत रहलाह ; ओ छलीह मिर्जा मुगल बेगक कन्या बीबी सईदा बेगम, जनिका शाहक चेला सभ 'ताज अल्मुखदरात' (लाजवंती सभ मे श्रेष्ठ) कहए लगलाह ।

एक टा विस्मयकारी घटनाक कारण ई बिआह भेलै । एक बेर दल जातिक किछु डाकू पुरुष सभक अनुपस्थिति मे मिर्जा मुगल बेगक घर पैसल आ सभटा दामी वस्तु लोढ़ि लेलक । किछु काल मे मुगल सभ डाकू सभके खेहाड़लक । ओही बाट मे शाहक घर छलनि । स्थिति बूझि शाह आ हुनक लोक सभ मदति लेल तैयार भेलाह, जे प्रस्ताव तिरस्कार सँ ठोकराओल गेल । शाह कें एहि सँ बड़ दुःख भेलनि ।

मिर्जा डकैत सभक हाथें मारल गेल । ई हिजरी 1124 (1713 ई०) केर घटना थिक । मुगल परिवारक जनीजाति सैयद सभ सँ माफी मङलनि । मिर्जा मुगल बेगक कन्याक बिआह शाह सँ भेलै । ओ धार्मिक आ गुणवती नारी छलि । हुनका संग हुनक भाए गोलो आएल छल जकर देहावसान लगले भए गेलै । शाह निःसंतान छलाह । बीबी एक बेर दोहद मे छलीह । कहल जाइत अछि जे एक बेर शाह अपन एकटा चेला कें खूब जोर सँ भिट दिस दौड़ल अबैत देखलनि । भिट पहुँचैत काल धरि ओ बेदम भए गेल छल । ओ बड़ दूर सँ 'पलो' माछ अनने छल, जकर फरमाइश बीबी साहिबा कने छलीह । ई सूनिकए संत बजलाह, 'जे नेना जन्म सँ पहिनहि फकीर सभ कें हरान करैत अछि, से जन्मक बाद की करत ? एहि सँ निःसंताने रहब नीक ।' ओहि नेनाक जन्म नहि भेलै । शाह सदिखन बजैत छलाह जे चेला सभ हुनक नेना छथि—जनिका सभक हृदय हुनकहि जकाँ प्रेम सँ घायल छल ।

आब शाहक जीवन समतल छलनि । प्रार्थना करैत, अपन काव्य-गान करैत, प्राकृतिक सौंदर्य आ गरिमा क अवलोकन करैत दिन बितैत छल । मनोहर प्राकृतिक दृश्य सभ हुनका आनन्द-विह्वल बना दैत छल आ हुनक काव्य मे सौष्ठव-मय अलौकिकता आनि दैत छल । ओ सदिखन जीवन, जगत आ जगदीशक पारस्परिक सम्बन्धक चिन्तन करैत छलाह ।

हुनक स्वाभाविक करुणा आ धर्मनिष्ठा बहुत लोक कें आकर्षित कैलक । ओ आदर्श चरित्रक सैयद छलाह आ लोक जेना हुनक पूजा करए लागल । अपनहि लेल पूजा भावक विरोध करैत ओ लिखलनि ।

'हे योगी ! आत्मपूजन सँ परहेज कए योग मे लागल रहू !
हे साधु ! चेला मुड़बाक रोग सँ सदिखन भागल रहू !'

लोक अनायास हुनका दिस आकर्षित होइत छल, जेना लोहा चुम्बक दिस । पीर आ मीर सभ कें ई नीक नहि लगैत छलै । डॉ० गुरबख्शाणी

हुनक विरोधी सभक प्रति लिखने छथि :

हुनका विरोधी सभ मे पीर मखदूम नूह केर वंशज पीर पंज पाक तान मसनद वा गादी पर छलाह। भटियारीक आजनाणी सैयद, आ शाह केर सरोकारी सभ तेहने। ई आदमी पीर बनि जाए, एतेक लोक एकर चेला होइ से हुनका अनसोहाँत लगैत छलनि। तखन छल सिन्धक शासक आ कल्होड़ो सभक नेता मियाँ नूर मुहम्मद कल्होड़ा (1718-55)। ओ युग कल्होड़ो सभक उत्कर्षक युग छलै, सिंधक लौकिक-अलौकिक समस्त सत्ता ओकरहि सभक हाथ मे छलै। पीर पंज पाक तानक प्रसंग डॉ० गुरबख्शाणी जे कहने छथि से साँच नहि अछि।

एहि सभ ईर्ष्या-द्वेषक कारण छल शाह केर पैघ शिष्य-समुदाय। शाह अपनहि एहि सभ सँ परहेज करैत छलाह, मुदा जकर आँखि झलफलाइत होइ से की देखतै। शाह कें धौजनि देबा लेल हुनक शत्रु सभमे उपरौंझ होइत छल। शासक मियाँ नूर मुहम्मद कल्होड़ो हुनक अस्तित्व समाप्त करबा लेल सभ किछु कैलक। भगवत्कृपा सँ केओ हुनक किछु नहि बिगाड़ि सकल।

'प्रभु केर असली सेवक कें उत्ताल ढेह नहि किछु करतै।'

शाह करीमक मकबरा लेल पाथर आनए शाह मुलतान गेलाह, जाहि ठामक पाथर नामी छलै। आपस होइत काल खुदाबाद मे धरोहि लागल लोक हुनक अभ्यर्थना मे आएल। मियाँ नूर मुहम्मद कल्होड़ा हुनका लेल माजूनक एकटा पौती पठौलक। ओ पौती धार मे खसबैत शाह बजलाह, 'एहि महा पुष्टिदायी केर लाभ समस्त सृष्टि कें होउ।' माजून मे माहुर सानल छलै। एक बेर कल्होड़ा हुनका अपन महल मे निमंत्रित कैलक आ विदा करबा सँ पहिने विरल नस्लक एकटा बंगट घोड़ी देलनि। शाह लगाम हटाए घोड़ी पर चढ़लाह आ घोड़ा खूब वेग सँ क्षण भरि मे बिला गेल। शाह किछु काल मे सकुशल आपस भेलाह। मियाँ नूर मुहम्मद कें अपन ओछ काज लेल लाज भेलै। ओ श्रद्धापूर्वक नतमस्तक भए हुनक शिष्य बनल। कहल जाइत अछि जे नूर मुहम्मदक सुपुत्र गुलाम शाह कल्होड़ा शाहक आशीर्वाद सँ जनमल। एतेक दिनक शत्रु मियाँ नूर मुहम्मद कें शाह प्रतिभावान पुत्रक वरदान देलनि।

अबाध एकांतवास लेल गंभीर प्रेमक कारण शाह लेल आब कोटड़ी मे रहब संभव नहि छलनि। भ्रमणक अवधि मे ओ नव हाला सँ चारि मील दूर किराड़ झील लग काँट-कुश सँ बेढल एकटा टिल्हा देखने छलाह। मनन-चिंतन लेल ओ हुनका आदर्श स्थल बूझि पड़लनि। अपन किछु चेलाक संग अथक परिश्रम कए ओकरा 'भिट' बना देलनि, ओ अमर स्थल जतए प्रार्थना करैत कवि जीवन बितौलनि, जतए एखन हुनक कब्र अछि। अपन किछु चेला सभक संग ओ प्रसिद्ध सिन्धी माटि सँ ओहि स्थान कें निपलनि-पोतलनि आ अपना लेल एकटा साधारण कुटी बनौलनि। ओहि ठाम माता-पिता लेल छोट हवेली। किछु भाग फकीर सभ

कें देलनि । ओतहि एकटा छोट मस्जिद सेहो बनौलनि । पावस मे भिट आ ओकर परिसर सुरंजित-सुवासित भए उठैत छल । 'सुर सारंग' मे कवि एकर हृदय-संवेद्य उल्लेख कैने छथि :

'कुसुमित अछि भेल भिट कोमल सिनेह सँ
फूल जकाँ छिटकि रहल बिजुरी ।
गोचर सुवासित परिपूरित भेल अछि
उवड़ुब किराड़क कछेड़ मे
बाध-बोन जलमय भेल अछि ।।'

कहल जाइत अछि जे कविक प्रपितामह बुलड़ीक शाह अब्दुल करीम एक वेर ओहि बाटे जाइत काल ओतहि नमाज पढ़ि भविष्यवाणी कैलनि, हमरा वंश मे एक गोटे, जे ज्योतिर्मय संत हैत, एतहि अपन घर बनाओत ।' डॉ० गुरबख्शाणी मतें शाह करीम अपन प्रिय सखा मख्दूम नूह सँ भेंट करए हाला जाइत छलाह ।

शाह भिट कें सरिअविते छलाह तखनहि पिताक असक होएबाक समाद भेटलनि । शाह हबीब अपन एकटा समदिया कें पठौलनि :

'कोन आकर्षण हमरा सँ रखने अछि फराक ?
जीवितहि करू ओ सभ जे करब बाद मुइलाक ।'

शाहक हृदय विगलित भए गेलनि । ओही समदिआ कें ओ ई समाद कहलनि :

'दुख नहि करू, हम नहि छी फराक,
देह दूर होइतहुँ, हम लग छी अहाँक ।'

शाह हबीब कें वड़ सांत्वना भेटलनि आ ओ शान्ति सँ मुइलाह । दुर्भाग्य सँ शाह कें आबए मे ततेक देरी भेलनि जे अन्तिम 'विदा' नहि कहि सकलाह ।

बापक देहान्त सँ शाह कें बड़ आघात भेलनि । बहुत दिन धरि शोकमग्न रहलाह । शाह हबीबक मृत्यु हिजरी सन् 1155 (1742 ई०) मे भेलनि । ई तिथि मुहम्मद सादिक नक्शवंदी केर पद सँ निर्धारित होइत अछि :

'मृत्यु सेतु कए पार बंधु सँ बंधुक होइछ संगम ।'

पिताक मृत्युक बाद शाह मात्र दस साल जीवित रहलाह । शाह हबीबक परोक्ष भेला पर समस्त परिवार कोटड़ी सँ भिट आबि गेल । साधु रूप मे शाहक नामक सोरहा भए रहल छल । तीर्थ बूझिकए लोक भिट आबि अपन प्रिय संतक अभ्यर्थना करए ।

'ओ (सामी) जनपद के अपन सुवासें कैलनि सुवासित ।'

हुनक समय वितबाक आध्यात्मिक उपाय छल, 'समा' (सूफी संगीत) जे अटल आ चंचल सहित आनो विख्यात गवैया सभ गवैत छल । संगीत हुनक जीवन आ आत्मा छलनि । ओ अपनहुँ संगीत कलाक विशेषज्ञ आ निपुण गायक छलाह । कहिओ काल अपन काव्यक गान करथि । जीवनक सांध्य वेला मे हुनका ठोर पर

सुर सुहनीक पहिल दास्तानक बाद जे 'बाइ' वा 'काफी' छैक से सदिखन रहैत छलनि : प्रियतम कें छोड़ि हम रहबै कोना ?

ओहि समय मे कवि कें कर्बलाक तीर्थयात्रा करबाक बड़ इच्छा भेल छलनि। वंग विलासर सँ किछु दूर गेल छलाह। एक साधु आबि कएं निवेदन कैलक : मान्यवर ! अहाँ लोक कें कहने छिअइ जे अहाँक कन्न भिट मे बनत। तँ हमरा छगुन्ता होइत अछि जे आब अहाँ एतेक पैघ यात्रा मे कोना विदा भए रहल छी ?

एहि कथा सँ प्रभावित भए ओ यात्रा स्थगित कैलनि आ भिट आपस भेलाह। ओहि ठाम जा कए कारी परिधान पहीरि इमाम सभक शोक मे 'सुर केदारो' गौलनि। अत्यल्प आहार लैत ओ बीस दिनक एकांतवास कैलनि। अपन एकांत कक्ष सँ बाहर आबि स्नान कैलनि आ तौनी ओढ़ि आध्यात्मिक चिन्तन में बैसलाह। एहि सँ पहिनहि ओ संकेत देलनि जे गीत-संगीत आरम्भ कैल जाए। तीन दिन धरि फकीर सभ गीत-संगीत मे लागल रहलाह। गीत-संगीत थम्हल तँ ओ सभ देखलनि जे शाहक आत्मा परमानन्द कें प्राप्त भए गेल छलनि। ई घटना हिजरी सन 1165 (1752 ई०) मे भेल। जीवन-यात्रा समाप्त होइत काल हुनक वयस 63 छल, एतबे वयस मे पाक पैगम्बर आ हजरत अली शाश्वत ज्योतिलोक गेल छलाह। हुनक भातिजक बेटा सैयद जमाल शाह हुनक उत्तराधिकारी भेलाह जे वंग विलासर मे हुनक अल्प दिनक विश्राम मे अत्यधिक स्नेह आ आदर सत्कार कैने छलाह।

हुनक वसीयतक अनुसार पार्थिव शरीर भिट मे महमूद शाहक पौतान लग दफनाओल गेल। मियाँ गुलाम शाह कल्होड़ा हुनक कन्न पर भव्य मकबरा बनौलक हिजरी सन 1167 (1754 ई०) मे। कारीगर छल ओहि युगक सुप्रसिद्ध ईदन। मीर शासन काल मे मीर नसीर खाँ मकबरा आ मस्जिदक मरम्मति करौलनि। हुनक पितिऔत मीर मुहम्मद खाँ मकबरा मे चानी केर द्वार लगौलनि जे एखन धरि ओहिना तहदर अछि। देवाल सभ पर फारसी दोहा सभ अंकित अछि जाहि मे शाह केर देहावसानक तिथि केर उल्लेख अछि। ओहि मे मुहम्मद पनाहक दू बैत बड़ मार्मिक अछि। छोट-पैघ सभक लेल शाहक मकबरा तीर्थ बनल अछि, जे केओ ओतए जाइत अछि तकरा आध्यात्मिक सुख-शान्ति भेटैत छै।

'प्रभु नाम रटै छथि जे भरि राति जागि।
आदृत सम्मानित होइत अछि हुनकरहि माटि।
नत मस्तक होइछ लाख-लाख ओतहि जा कए।'

शुक्रक राति कें फकीर सभ ओहि संतक काव्य सँ बीछल पद सभ गबैत छथि। गायन दस बजे राति मे गाजा-बाजाक संग आरम्भ होइत छै आ सूर्योदय काल धरि चलैत छैक। शाह अपन समस्त काव्य-रचना आत्म-विस्मृतिक स्थिति मे कैने

117150
9.12.04

छलाह् जे हुनक चेला सभ संगहि लिखैत गेल। किछु लोक कें भ्रम छनि जे मृत्यु सँ पहिने शाह 'रिसालो' कें किराड़ झील मे फेकि देलनि। हुनका डर छलनि जे लोक एकर अनुचित अर्थ बूझि भ्रष्ट हैत। आर विश्वास छैक जे एहि सँ हुनक शिष्य सभ व्यथित भेल। शाह कें दया भेलनि, ओ माइ नियामत सँ अनुरोध कैलनि जे ओ हुनका सभ कें पुनः लिखावथि। एहेन विश्वास छै जे एहि नारी कें शाहक अधिकांश काव्य कंठस्थ छलनि। नव प्रस्तुत एहि 'रिसालो' क नाम भेलै 'गंज', जे तमर फकीरक संरक्षण मे रहल जे हुनक वंशज सभ एखन धरि रखने छथि।

ई विश्वसनीय नहि अछि जे एकटा सूफी कवि एना अपनहि हाथें अपन काव्य नष्ट कए देत। डॉ० गुरबख्शाणी खूब नीक जकाँ कहने छथि: कवि सदिखन सत्य-गान करैत अछि, सत्य ने मरैत अछि, ने मारल जाइछ। शाह स्वयं अपन काव्य कें पुनीत वाणी (आयत) कहने छथि—पुनीत मरणातीत अछि। लोकप्रिय विश्वास साँच छै वा फूसि, हुनक काव्य मे निहित सत्य हमरा सभक संग अछि आ कहिओ नहि मरत।

शाहक कोनो चित्र कतहु नहि उपलब्ध अछि, मुदा डॉ० गुरुबक्शाणी हुनका जेना चित्रित कैने छथि से सत्यक बहुत निकट अछि। ओ अपन मुकद्दम-ए-लतीफी (रिसालो केर भूमिका) मे लिखने छथि: कहल जाइत अछि जे शाह बेसी नाम नहि, सामान्य सँ किछु बेसी पैघ छलाह। ओ ने तेहन मोट आ ने बेसी पातर छलाह, कान्ह चाकर छलनि, देह मे खूब ताकति छलनि, जीवन भरि ओ स्वस्थ रहलाह। जुआनी मे केश कारी छलनि, दाढ़ी गोल आ सुन्दर छलनि। गोराइ लेने गहुमा रंग, चाकर ललाट, ज्योति-पुंज जकाँ बेसी काल चमकैत कारी, आकर्षक आँखि। हुनक मुखमंडल ओजमय छल आ बुढ़ारी मे जेना आभा झहरैत छलनि।

शाहक आभामय ललाट पर लिखल छल परोपकार, आँखि सदिखन अलौकिक करुणा सँ भीजल। हुनक काव्य हुनक चरित्रक दर्पण थिक। अपन काव्य मे प्रशंसित गुण सभक ओ अपनहि मूर्ति छलाह। कोनो स्थिति मे नम्रता आ धैर्य नहि छोड़ब, मन कें मोम-सन नमनीय राखब, सभक संग नीक व्यवहार राखब—हुनक जीवन-पद्धति छल। धूरा मे ओ जे देखलनि से समस्त सृष्टि मे कतहु नहि देखने छलाह।

'धूरा मे जे आछि से नहि आन वस्तु मे।'

आत्मोत्सर्ग मे हुनका शाश्वत जीवन भेटलनि। शाह साहेब सादा आ थोड़ खाइत छलाह, साधारण वस्त्र पहिरैत छलाह। अपन पशाहनि मे हुनक विश्वास नहि छलनि।

'जे पीबि लेलक नैसर्गिक मद, राखत रुचि परिधान लेल
योगी पहिरइ छथि जैह-सैह, से कवि लतीफ कहि गेल।'

शाह कारी ताग सँ सीअल योगी वला अँगरखा पहिरैत छलाह। माथ पर उज्जर कुलह (दरवेश सभ जे टोपी पहिरैत अछि) कारी वस्त्र मे लपटल रहैत छल। हाथ मे योगीवला फराठी (बेरागिन)। खाइ-पीबइ लेल कश्ता वा कशकोल (नाह सन बासन जे फकीर सभ रखैछ)ई वस्तु सभ एखन धरि श्रद्धा भक्ति सँ भिट मे राखल अछि। ओ बेसी काल खाली पैर बुलैत छलाह, कहिओ काल पनही

पहिरथि। खाट (संदाल) पर चेफड़ी लगाओल सुजनी ओछा कए सुतथि। कठोर संयमी जीवन छलनि से सुतवे करथि कम।

ओ नितान्त स्वार्थहीन छलाह, आनक एहसान नहि उठबैत छलाह। कहिओ ककरो पानि आनए लेल सेहो नहि अढ़वथि, हुनक विचार सँ तकरो लेखा एहसान मे छै।

कहल जाइत अछि जे हुनक दर्शन लेल एक शिष्य साले-साले भिट अबैत छल आ शाह कें एकटा सादा ऊनी कम्मल सनेस दैत छल। एक वेर अभावक कारण ओकरा सँ कम्मल कीनव संभव नहि भेलै। ओहि साल ओ भिटक तीर्थयात्रा नहि कैलक। दोसर साल ओ आएल तँ संत उत्सुकता सँ पुछारि कैलनि : 'परुकाँ साल अहाँक दर्शन किएक नहि भेल ?' गरीब आदमी उत्तर देलक : 'परुकाँ साल हम अहाँ लेल कम्मल नहि कीनि सकलहुँ, आ खाली हाथ अहाँक चरण स्पर्श करैत लाज भेल।' तखन शाह वजलाह, 'जे एक मित्र कें दोसर मित्र सँ फराक करैत होइ तकर कोनो मोल नहि।'

शाहक हृदय वड़ कोमल छल। मानव, पशु, पंछी, सभ लेल हुनका मे करुणा आ प्रेम छलनि। अपन जीवन मे कोनो जीवक अवघात नहि कैलनि। शिकारी सभ कें ओ महाशिकारी-मृत्यु-केर स्मरण दियबैत छथि जे ओ सभ मूक प्राणी कें वध करब छोड़ए।

'महा शिकारी केर अहाँ अपनहुँ हैब शिकार।
तैओ अहाँ कए रहल छी शिकार॥'

शिकारीक जाल मे सारस के देखितहि हुनक हृदय विगलित होइत छल। सारस एहि लेल नहि किकिआइत छल जे ओ वाझि गेल, अपन बच्चा सभक स्मृति व्यथित करैत छलै।

'जाइत जाइत सारस किकिआइत अछि।
बच्चा सभ छूटि गेलै तैं पछताइत अछि॥'

सारस केर करुणा हुनक करेज कटैत छल।

'सारस केर क्रंदन सँ काल्हि हमरा मन पड़ल प्रियतम
जकरा बिनु बीतइ अछि समय पर्वत-सम।'

हुनक हृदय एतेक कोमल छल जे दूटा टूअर पिल्ला कें अपनहि हाथें सेवा कए पोसलनि। एकटा 'मोती' दोसर 'खेनो' कहल गेल।

शाह कें संगीत सँ प्रेम छलनि, अचेतावस्था मे संगीत सुनैत ओ अंतिम साँस लेलनि। सितारक तार मे ओ अलौकिक धुन सुनैत छलाह :

'गान नहि बाजा करैत अछि,
आत्मा केर रहस्य मुखरित अछि।'

सुर सोरठ मे ओ संगीतक महात्म्य आ आत्मा-गीत केर अमरताक गान कैने छथि।

शाहक प्रभावशाली व्यक्तित्वक उपस्थिति मे ककरो हल्लुक गप्प करबाक साधंस नहि होए। हुनक आचरण सदिखन संयत आ गंभीर होइत छल। ओना मनोरंजन लेल वगन्द वा वरु फकीर सँ हँसी-ठट्ठा करैत छलाह, जनिका ओ सुर बिलावल मे अमर बना देलनि। एहि सुर मे स्नेहवश एहि नाङर आ मैल-कुचैल फकीर लेल किछु उपहासास्पद विशेषणक प्रयोग कैने छथि, जेना-मलिन नारकी आलसी जीव आदि। लगैत अछि जे कोटड़ी निवासी ई फकीर पेटू छलाह, कहिओ स्वच्छ नहि रहलाह। स्पष्ट अछि जे एहि सँ शाह के सुर बिलावल मे वगन्दक प्रति किछु हास्यजनक टिप्पणीक प्रेरणा भेटल :

'आलसी वगन्द फेर कोंटड़ी सँ आएल
ओकरा किरीर-डाँटक स्वाद चखाउ
नारकी वगन्द फेर आएल
सैयद सगति सँ पावन होइछ अपावन
परिमल केर संग रहू अपनहुँ सुवासित हैव।'

शाहक चूनल फकीर सभ मे प्रमुख छलाह : प्रधान खलीफा तमर फकीर, जनिक वंशज आइ धरि हुनक दरगाहक मुजावर होइत छथि: महमूद शाह, जे फकीरी लेल अमीरी छोड़ देलनि। महमूद शाह लेल शाह कें एतेक श्रद्धा छल जे अपन कब्र हुनकहि पौतान मे बनेबाक वसीयत कैलनि। पैघ जमींदार शाह इनात, मियाँ हाशिम अलवी रेहान. पोटो, गायक आ शाह केर एक लिपिक, आ अंत में बलाल। बलाल सँ शाह कें एतेक प्रेम छलनि जे ओकर संगतिक सुख लेल ओकरा गाम जाइत छलाह।

शाहक समकालीन सिन्ध मे अनेक सूफी संत छलाह जनिका ओहि ठाम स्वयं समय-समय पर जाथि। जुआनी मे हुनका सिन्धक महान् शहीद संत शाह इनायतक भेंट करबाक अवसर भेल छलनि। कहल जाइत अछि जे हुनका देखि कए शाह इनायत ई पद पढ़लनि :

'डेग करू नहि मन्द, आबए सोझा दुर्गम पर्बत।
दुर्गम यात्रा भावि, स्वार्थीजन फिरि जाथि।
सत्य सुमन केर माल प्रियनम कें पहिराउ।
भनथि शाह इनात, ओ अचिर तुव सुधि लेत।।'

शाह उत्तर देलनि :

'सुन्दरि, डेग करू नहि मन्द, आबओ सोझा पर्वत श्रेणी।
प्रियतम के हेरइत जाउ, अछि जेमहर पर्वत श्रेणी।।
प्रेमानल मे धसबा सँ पहिनहि चेत हे ससुई।

प्रियतमक सुकोमल स्नेहक आशा नहि छोड़ू ससुई ।।
ओ छथि नहि दूर अहाँ सँ, आ छथि वैसल ओतवे लग ।
जतवे अछि दूर अहाँ सँ अहँ केर अपन दूनू दृग ।।'

ख्वाजा मुहम्मद जमान लवारी सँ भेट करवा लेल शाह हुनका ओहि ठाम गेल छलाह, ओना लवारी संतक वयस शाह सँ कम छलनि। ख्वाजा साहेबक आध्यात्मिक महत्ता सँ ओ एतेक अभिभूत छलाह जे हुनक चर्च होइते ओ निम्न-लिखित दोहा पढ़थि :

'हे माँ, हम छी देखने हुनका सभ कें जे देखने छथि प्रियतम ।
हुनका सभकेर गुणगान करी से कोना करब हम छी अक्षम ।।'

अपन युगक सुविख्यात संत, मखदूम मुअयनक भेंट करबा लेल शाह साहेब बेसी काल ठट्टा जाइत छलाह। वस्तुतः शाहक अनुरोध सँ ओ अवैसी पंथ विषयक पोथी 'अवैसिया' लिखलनि। शाह स्वयं अवैसी फकीर छलाह। अवैसी ओ फकीर भेल जकर केओ गुरु होइ वा नहि ओकर चेतना केर जागरण ईश्वरक कारण होइ। ककरो नहि बूझल छै जे शाहक गुरु के छलाह—संभवतः आत्म संयम सँ हुनका अत्मानुभूति भेल छलनि।

'तुहफतुल किराम' मे कहल गेल अछि जे मखदूम साहेबक महाप्रयाण सँ एक दिन पहिनहि शाह अपन फकीर सभ कें कहलनि, 'चलू अपन प्रिय मित्रक अंतिम दर्शन कए आबी।' ओहि ठाम जा कए फकीर सभ समा (सूफी संगीत) आरंभ कैलनि जाहि सँ ठट्ठाक दरवेश एतेक स्पंदित भेलाह जे बेसुधि भए ओ अपन कोठरी गेलाह आ लगले तन तरुवर कें छोड़ि हुनक मन पंछी उड़ि गेल।

सचलक पितामह मियाँ साहेब डिनो सँ सेहो शाह के भेंट भेल छलनि। मियाँ साहेब-डिनो लोक सभ सँ नुकाएल रहबा लेल सरिसवक खेत मे छलाह। हुनका देखि कए शाह कहलनि : 'प्रियतम कें पर्दाक पाछू नहि राखल जाए, सभक दर्शन लेल ओ प्रगट होथि।' तखन दरवेश खेत सं बहार भेलाह। शाह जखन दोसर खेप दराज गेलाह, नेना सचल कें देखि कहलनि, 'हम सभ जे बासन आगि पर रखने छी तकर ढाकन यहै हेठ करता।'

कहल जाइत अछि जे सेहवणक मखदूम दीन मुहम्मद सेहो शाह लतीफक आत्मीय बन्धु छलाह। शाह लतीफ हुनका सँ भेंट करबा लेल सेहवण जाइत छलाह। एक खेप दूनू गोटे अपन-अपन दस्तार केर अदला-बदली सेही कैलनि जे अटूट मैत्री आ अचल प्रेमक प्रतीक छल।

हिन्दू सूफी मदन शाह साहेबक दोसर आत्मीय बन्धु आ कोटड़ी निवासी छलाह। शाह कें हुनक संगति नीक लगैत छलनि।

हेबनि मे एक टा नव तथ्य प्रकट भेल। जखन शाह तीस सालक छलाह तँ महान् सूफी काइमुद्दीन कलंदरक दर्शन करबा लेल बुकेरा गाम गेलाह। दू दिनक

बाट बुलैत ओ ओहि ठाम गेल छलाह। बुकेराक संत कें टूटल खाट पर बैसल देखलनि। शाह केर खूब आदर-सत्कार भेलनि। ओ शाह कें कहलनि, : 'हम अहाँक पैघ आध्यात्मिक भविष्य देखि सकैत छी। अहाँ रमजान धरि एहि ठाम बिलमि जाउ।' शाह हुनक आदेश मानि सम्पूर्ण मास रमजान हुनक संग रहलाह। एहि अलौकिक पुरुषक संगति मे ओ सुच्चा अवैसी भय गेलाह।

ओ जाहि कोनो सूफी पंथ केर अनुयायी होथि, हुनक काव्य सँ एतबा स्पष्ट अछि जे ओ जाति, वर्ण आ सम्प्रदायक बंधन सँ उपर छलाह। ओ सुन्नी वा शिया नहि छलाह। एक बेर जखन पूछल गेलनि जे ओ सुन्नी छथि वा शिया, ओ उत्तर देलनि, 'हम दूनूक माझ मे छी'। तखन कहल गेलनि जे सुन्नी आ शियाक माझ मे किछु नहि छै, ओ उत्तर देलनि, 'हमहु किछु नहि छी'।

'ताकइछी अहाँ जौं प्रियतम कें, धर्म छोड़ि दिअ।
प्रियतम कें अछि देखने जे सभ, सब धर्म छोड़ि देलक।

ओना ओ यथार्थतः सूफी संत छलाह तैओ धार्मिक कर्त्तव्य सभ निष्ठापूर्वक करथि जे लोक कें एक टा आदर्श भेटओ।

मार्गदर्शकक रूप मे ओ सत्य पथ परिभाषित कैने छथि :

'अपन धर्म कें चीन्हू आ अध्यात्मिक पथ पर चलू।
हृदय अपन सत्यक अनुगामी बना कए
अनुभूति जगतक सुख उठा लिअ।
अपन पथ पर दृढ रहू, अहाँ नहि हैब अपावन।'

सुर रामकली साक्षी अछि जे शाह कें कोनो सिद्ध योगी वा संतक संगति छलनि जनिका सँ हुनक पूर्व निर्धारित संबंध छल। लगैत अछि जे हुनका सँ शाह कें 'अनुग्रह' भेटलनि। शाह साफ-साफ गछने छथि :

एहि जीवन में हमरा वरदान भेटल एक योगीक संगति जनिका सँ हमरा सभक आध्यात्मिक संबंध छल जे हमरा सभ लेल प्रकट भेल।'

ओ आर कहने छथि : गुरु जे ई साधुवला अँगरखा देलनि से अमूल्य निधि थिक। सभ साधक कें ओ ई अनमोल उपदेश दैत छथि : अहं के बिसरि जौं अहाँ गुरुक देल अँगरखा पहिरब, अहाँ के अपन लक्ष्य अवश्य प्राप्त हैत।

'गुरुक देल अँगरखा सभ सँ पैघ वरदान थिक हे साधक ! एकरा निष्ठा सँ पहिरू, योगक आसन मे बैसू, गुरुक देल अँगरखा हमरा लेल गहना थिक, निष्ठा सँ पहिरब जौं एकरा, लक्ष्य धरि यैह लेने जैत।'

योगी सभक प्रभाव सँ हुनका मनक द्वैत भाव बिला गेल, साम्प्रदायिक संकीर्णता वा कट्टरता हुनका हृदय मे नहि रहल :

'ओकरा नहि मतलब छै कुफ्र वा इस्लाम सँ।
एतबे छनि कहबी : प्रियतम कें अपनाउ।।'

भाषा, शैली आ जनपदीय वस्तुक निर्वाह

व्यक्ति आ कवि दूनू रूप मे शाह महान् देशभक्त छलाह। निःसंदेह ओ मानवताक प्रेमी छलाह आ हुनक प्रेम लेल कोनो भौगोलिक सीमा नहि छल। ओना ओ अपन जन्मभूमि सिन्ध केर एकान्त उपासक आ भारतक महान् प्रेमी सेहो छलाह। हुनक 'रिसालो' एकर प्रचुर प्रमाण दैत अछि। हुनक सूफीवाद मे देशप्रेमक आ गाथा केर तानी भरनी अछि।

ओ युग जकर अक्षर जगत मे अरवी आ फारसीक प्रभुता छल, शाह अपन मातृभाषा सिन्धीक सम्पदा, जीवंतता आ काव्यात्मक ऊर्जा देखौलनि। रिसालोक विपुल शब्द वैभव आश्चर्यक स्रोत आ विद्वान आ साहित्यकार सभ लेल गंभीर अध्ययनक कोष थिक। एतेक सत्य जे हुनक काव्य मे अरवी आ फारसी मूलक बहुत शब्द अछि मुदा ओ सभ सहज आ सुखद रीति सँ आभरणक काज करैत अछि। हुनक भाषा प्राकृत सँ बहुत लग अछि—जे वस्तुतः हमरा सभक वर्तमान भाषा-विवाद सोझरबैत अछि—ई एक दिस संस्कृत आ दोसर दिस फ़ारसी आ अरवी शब्दावलीक बीच सुखद सामंजस्य स्थापित करैत अछि। एहि मान्यताक पुष्टि लेल वृहद शब्द-सूची प्रस्तुत कैल जा सकैछ।

शाहक काव्य केर सभ सँ पैघ विशेषता थिक जे एकर शैली आ विषयवस्तु दूनू फारसी आदर्शक आतंक सँ मुक्त अछि। अपन काव्यात्मक अभिव्यक्ति लेल ओ फारसी छन्द विधान नहि ग्रहण कए दोहा चुनलनि जे भारतीय संत कवि सभक प्रिय छंद थिक। एहि प्रकार ओ विदेशी आ परम्परागत तकनीक सँ मुक्त भेलाह। हुनक काव्य मे दोहा कें अतुल गरिमा आ मधुरता भेटलै। ओ एहि मे विविधता अनलनि जे एकरा अपन आकर्षक आवरण देलकै। एतहु ओ दू पाती वा मात्रादि सम्बन्धी कोनो विधान केर बन्हेज मे पड़ब नहि गछलनि। हुनक दोहा सभक मात्रा जे विविधता उपस्थित करैत अछि ताहि सँ हुनक काव्य मे अद्वितीय मधुरता आ आकर्षण अबैत छनि। दू पाती वला नियमक सीमा कें टपि उदारतापूर्वक एगारह पाती धरिक समावेश कैलनि।

शाहक काव्य पठबे लेल नहि, गायन लेल सेहो अछि। किछु सुरक नाम विषय-

वस्तु पर आधारित अछि, जकर चरित्र नितान्त सिंधी थिक । शेष सुरक नाम राग-रागिनी पर आधारित अछि ।

ओहि युग मे शाह कें 'सिंधक हाफिज' एहि लेल नहि कहल जाइत छलनि जे हुनक काव्य मे हाफिजक काव्य सँ समरूपता अछि; एहि लेल जे जहिना 'दीवान-ए-हाफिज' फारसक अनमोल निधि थिक तहिना 'रिसालो' सिन्ध निवासी लेल । दूनू प्रभु प्रेरित कवि छलाह । हाफिज गजल मे काव्य, कल्पना आ भावना केर घघकैत तीव्रता सजौलनि, दोहा मे सैह कैलनि शाह । ओना शाह कें सिन्धी सँ ततेक स्नेह छलनि जे 'सुर सुहनी' छोड़ि ओ कतहु फारसी उद्धरण नहि देलनि । ओहो फारसी वैत कोनो फारसी कविक नहि, सिन्धक महान् सूफी संत झोक शरीफक शाह इनायत शाह केर थिक ।

'प्रियतमक चरण मे माथ हमर अर्पिते भेल तँ की भेलै !'

ओना ठाम-ठाम ओ कुरान आ हदीस सँ उद्धरण देने छथि, मुदा अपन अपूर्व काव्यात्मक शैली मे ओकर आध्यात्मिक महत्त्व फरिछा देने छथि । शाह केर उपमा सभ अपन प्रिय जनपदक साधारण वस्तु सभ सँ लेल गेल जाहि मे निहित प्रतीकात्मक महत्त्व ओहि ठामक लोक आसानी सँ बुझैत अछि । एहि ठाम किछ उदाहरण देल जाइछ :

'सागर अछि घोराएल घोरमट्टा जकाँ ।
दुःख चोटी चढ़ल अछि पिपड़ी जकाँ ।।
अछि वेढने हमर हिअ लतिका जकाँ ।
धारक पार ओ (सुहनी) देखलक योगिक धूनी ।
छल जगौने मेहार माटिक दीप जकाँ ।।
ओ (तमाची) मोती छिड़िऔलक माछक वोर जकाँ ।
कटला पर घास जेना अछि कुहरैत ।
प्रियतमक वियोग मे हमर हृदय अछि कुहरैत ।।
जेना बनवइ लोहार औंठी मे औंठी ।
तहिना प्रियतम हृदय अछि बनबैत ।।
जेना गाछ जनमैत अछि बरसात मे ।
प्रियतमक वियोग मे उपजैत अछि दुःख ।।
दाना जेना फराक होइत अछि भूसा सँ ।
हमर तन सँ हटौता ओ दुःख तहिना ।
बिनु घुमड़ले आँखि बरिसैत अछि मेघ जकाँ ।
रौद सन योगी प्रकट भेल फतिंगा जकाँ ।।
स्वातीक बुन्न लेल तरसैत अछि सीप ।
तहिना मलीर लेल तरसैत अछि हमर (मारुई) मन ।।

जेना पानि मे नोन, हमर हृदय मे प्रेम ।
नीमक डारि जकाँ ओ सभ उखाड़ि लेलनि हमर मन ।।'

अपन दर्शनक निरूपण लेल जेना आन कवि सभ अरबी-फारसी सूफी सभक नाम लैत छथि, रूमी आ मंसूर कें छोड़ि शाह आनक नाम नहि लैत छथि, सेहो मात्र दू खेप । हुनका भारतीय योगी सभ सँ प्रेम छनि । हुनक प्रेमक रहस्यवाद सेहो सिन्धी लोकगाथा सभ मे सीमित अछि । लैला-मजनू, शीरी-फरहाद, सन प्राच्य कवि आ जन साधारण मे लोकप्रिय रोमांटिक गाथा सभक छाँह छूह सँ हुनक काव्य मुक्त अछि । हुनक सुर सभक केन्द्र मे नायक नहि, नायिका सभ अछि । फारसी काव्य सभ मे जे मजनूं आ फरहाद अछि, से शाहक नायिका सभ अछि— पुरान बाट सँ सुखद नव पथान्तर ।

संसार भरिक कवि अपन देश-प्रेम रमकैत शब्द सभ मे व्यक्त कैने छथि । शाहक सुर मारुई मे एहि कोटिक किछु श्रेष्ठ पाँती अछि । हुनका लेल अपन जन्म-भूमिक धूरा पर्यन्त संसारक सभ सँ दामी कस्तूरी सँ पंघ अछि, जन्मभूमिक माटि मे गाड़ल जैब अमरत्वक प्राप्ति थिक ।

हुनक काव्य मे शोधन प्रक्रिया मे गुरु लोहार, कसाई, धनुर्धारी, मलाह, धोबी रंगरेज आदि बनैत छथि । जंग लागल लोह कें छिपा कए लोहार पानि मे दैत अछि आ तखन पीटि कए चमका दैत अछि । तहिना साधक कें अग्निदीक्षा सँ गुरु अध्यात्मिक नायक बना दैत छथि :

'अपन माथ निहाइ बना लोहारक घरक ठेकान पूछू ।'

जेना मलाह बोर दए पानि सँ माछ घिचैत अछि, तहिना प्रियतम प्रेमी कें घिचैत अछि, जकरा वंशी मे अचल अदृश्य ताग होइ छै ।

'हमरा गरा मे वंसी लगाकए प्रियतम नहि छोड़बैछ ।'

शाह लेल थरक चरवाह अर्थात् मारुई केर सरोकारी सभ 'साधु' छथि, ओ सभ भासमान, अलौकिक नगरी मलीर मे अपन आध्यात्मिक उच्चता सँ रहैत छथि ।

शाह केर 'सुर कापाइती' सूत कटनिहार आ चरखाक प्रतीक पर आधारित अछि । सूत कटनिहारि भेल जीव, चरखा ओकर हृदय आ प्रभुक नामक जप काटल सूत ।

उदाहरण लेल ओ सम्पन्न पेशा सभ सेहो लेने छथि । सिन्धी सर्राफ आ महाजन सभक सोरहा देशान्तर धरि छलै । गुरु सोनार छथि जनिका असली नकली सोनक परख छनि । जौहरी, जे अपन ताल सँ असली नकली हीराक परख करैत अछि, दामी पाथर सभ तरासैत अछि; सौदागर, जे सागर पार कए लंका सँ सोन अनैत अछि । हा हन्त ! ओ सर्राफ, महाजन, सौदागर सभ आब नहि अछि, अगवे पाखंडी आबि गेल अछि । शाह पश्चात्ताप करैत छथि :

'हे सोन अहूँ जाउ, चलि गेलाह सोनार।
अहाँक मोल जे नहि बूझत, फेंट देत टलहा में।
हीरा जवाहर केर मोल के बूझतै ? चलि गेलाह सर्राफ।
जंग लागल लोह कें पीटैत अछि लोहार।'

ऊँट आ नाह सँ हुनका चिन्तनक गाढ उन्मेष होइत छनि। मानव मनक तुलना ओ ऊँट सं करैत छथि जकरा पाटल खोआ कए सोन रूप सँ सजा देवै तैओ कँटाह गाछ सभ खैत। मुदा ऊँट ओ जीव थिक जे भूखल-पिआसल शीत-रौद सहैत भारी बोझ उठौने दूर-दूर धरि दुर्गम बाट पर जाए सकैत अछि। मानव-मन कें आध्यात्मिक बाट पर चलबाक शिक्षा देल जाए तँ तहिना चलत :

'हम ओकरा झाँखुर मे बान्हल जे खोएबै पाटल,
दुष्ट ऊँट नुका कए खाइत अछि अमती काँट।
हे माँ, एकर स्वभाव सँ हमरा छगुन्ता अछि।'

'सुर श्रीराग' मे ओ मानव शरीरक तुलना एहेन नाह सँ कैने छथि जकर पेनी मे हजारटा भूर छै, बसात सँ उठैत डेह मे नाह डोलि रहल छै। सार्थवाहक चेतौनी कें मलाह सभ कान नहि दैत छै। महाकवि लिखने छथि :

'जा धरि छी सागर में सदिखन चेतल रहू ;
विपत्ति कें नोतबाक हो तखनहि अहाँ सूतू
जागल रहू लागल रहू, नाव लेने तट लागू...'

सिन्ध 'विहग-स्वर्ग' थिक—बुलबुल, सुग्गा, मोर, बाज, वत्तख, सारस, तितिर, कोइली, कौआ, बगुला, क्रौंच, कलहंस, चिल्होरि, गिद्ध, परबा, नीलकंठ—सिंध केर गाम, मरुभूमि आ पहाड़ सभ पर रहै अछि। एकर सभक विशेषताक अध्ययन कए शाह उदाहरण आ आध्यात्मिक रूप मे लाक्षणिक उल्लेख कैने छथि।

रंग-विरंगी परिधान मे मोर-जकाँ गाछक डारि सभपर फुदकैत ससुई-पुन्हूँ कें ताकि रहल अछि। ओकर स्वर सुग्गा वा कोइली वा सारस सन मधुर छै।

सिन्धी काव्य मे प्रियतमक समदिआक रूप में कौआक आदर होइत छै। कविगण कौआ कें प्रियतमक एहेन समाद आनइ लेल विभिन्न प्रलोभन दैत छथि जे मिलनक संभावना होइ अथवा प्रियतम कें ओकर अभिवादन पहुँचाबइ।

संस्कृत काव्य मे विख्यात 'हंस' वास्तविक सं बेसी काल्पनिक अछि। ओ ब्रह्माक वाहन अथवा स्वयं ब्रह्मा थिक। एहि नाम सँ एकटा सम्प्रदाय विशेष सेहो अछि। हंस कें सिन्धी मे कहल जाइत छै 'हंज'। शाह लतीफक 'सुर कारायल' मे हंज थिक 'हरिजन' वा 'आत्मज्ञानी' केर प्रतिनिधि। कौआ आ बगुला थिक साधारण सांसारिक लोक, जड़ बुद्धि सँ चालित लोक। कौआ आ बगुलाक बीच हंस नहि रहैत अछि। ओ अनन्त आकाश मे उड़ि कए कोनो गिरि शिखर पर निर्मल, स्वच्छ आ शांत निर्झरणी ताकि लैत अछि, जकर तल मे ओकरा भेटैत छै मोती।

ओ अनन्त में उड़ैत अछि आ अतल में डुबैत अछि—पुण्यात्माक यैह लक्षण थिक। कौआ आ बगुला अपवित्र पोखरिक कछेड़ मे बैसल माछ वा लोथ तकैत अछि, जेना सांसारिक लोक अनन्त में उड़बा सँ, अतल मे डुबबा सँ अनभिज्ञ सांसारिक वस्तु सभ तकैत अछि। संसार थिक अपवित्र पोखरि जतए बगुला आ कौआ रहैत अछि। यैह प्रतीक शाह 'सुर कारायल' मे प्रतिपादित कैने छथि :

'बगुला सभ सँ फराक भए अनंत आकाश मे हंस उड़ल
जतए प्रियतम बसैत छथि ताकि लेलक ओ स्थल।
ओकर दृष्टि जाइत छै अतल धरि।
ओकरा चाही मोती जे अतल मे रहैत अछि।'

संसार आइ ढोंगी-पाखंडी सभ सँ दूषित भए रहल अछि, जहिना झरना आ झीलक स्वच्छ जल बगुला आ कौआ सँ अपवित्र होइ अछि तैं 'हरिजन' एहि मिथ्या आ दुष्ट संसारक एहि दूषित वातावरण मे आब नहि रहए चाहैत छथि :

'कौआ सभ शुद्ध जल कए देलक दूषित।
होइत अछि हंस ओतइ रहबा मे लज्जित॥'

तखन अन्तिम उपदेश :

'गुणभंत हंस संग रहि लेब एक बेर।
बगुला केर संग अहाँ जैब नहि एक बेर॥'

कारायल मोर केर पर्याय थिक। एहि सुर मे मोर भेलाह गुरु। साँप आ विशेषतः नाग कें मारबाक विशेष कला मोर जनैत अछि। मानव-मन नाग जकाँ विषाक्त अछि, ओकरा जितबा लेल समर्थ गुरुक सहायता छोड़ि आन उपाय नहि। दुर्भाग्य जे 'हरिजन' आब विरल छथि, जेना कवि कहलनि :

'किंझर झील मे उताहुल भए तकलौं एकटा मोर, नहि भेटल;
जकरा लेल निष्ठा अछि से हंस सभ उड़ि गेल।'

शाह अपन प्रिय जन्मभूमि सिन्ध केर पशु पंछी धरि सीमित रहैत छथि। तारो (मरुभूमिक कोइली) वर्षा लेल तरसैत अछि, जेना प्रेमी अपन प्रेयसी लेल। बाबीहो मरुथलक पंछी थिक, जे मरुथलक उष्ण बसात लगने मरि जाइत अछि :

'हम उष्ण बसातक झोंक सँ बावीहो जकाँ मरि जाइ
जौं हम कहिओ अपन प्रियतम कें बिसरि जाइ।'

दू टा भिन्न परिस्थितिक आत्माक मिलन कें कवि भौंरा आ कमलक उदाहरण सँ चित्रित कैने छथि। एहि सुरक चित्र थिक :

'कमल केर छै माटि में जड़ि, गगन मे उड़इछ भ्रमर।
एहि दूनूक प्रेम मे अछि निहित प्रेमाग्रह अमर॥
प्रेम प्याला अछि पिबैत दुहू निरंतर।
प्रेम नहि घटतै कोनो युग में जकर॥'

पंछी आ अहेरी हुनका मानव हृदय आ असुरक स्मरण करबैत छनि :

'जे पंछी थिक, से पिजड़ा सेहो थिक।
जे झील थिक, से हंस सेहो थिक।
अहेरी सेहो पिजड़ा मे रहैत अछि।
हंस केर जीवन कठिन कैने अछि।'

शाहक 'सुर डहर' संगीत, बलिदान आ सारस सभक कोमल प्रेमक प्रति करुण श्रद्धाञ्जलि थिक। अपन पर्वतीय निवास सँ ओ सभ भोजन ताकइ लेल अपन-अपन बच्चा कें छोड़ि विदा होइत अछि। हेंजक हेंज।

'अटूट प्रेम मे बान्हल ओ हेंज अछि उड़ैत।
मानव सँ बेसी खग देखू, प्रेम अछि रखैत।।'

कोनो झील वा झरना लग जा कए ओ सभ कोमल प्रेमक गीत गबैत अछि। दुर्भाग्य सँ दुष्ट अहेरी कतहु सँ आबि ओकरा सभक आनन्द नष्ट कए दैत अछि— एहिना प्रेम मे लागल हृदय कें मृत्यु नष्ट करैत अछि। ओहि मे सँ किछु कें ओ अपन झोड़ी में रखैत अछि, ओ सभ अपन बच्चा लेल कानैत-कलपैत अछि। विरह-वेदना सँ क्षत कविक हृदय सारस कें एहि दुखद स्थिति में देखि आर बेसी आहत होइत अछि :

'काल्हि कुंज सभक कलपव हमरा
अपन प्रियतम मन पाड़ि देलक।
हम जीबइ छी एतइ जकरा बिनु शून्य जीवन।'

मरुकन्या मारुइ, जकरा राजा उमर गामक इनार लग सँ जबर्दस्ती उठा कए लए गेलै। उमर सँ बिआह करब ओ नहि गछलक। ओ मारुइ कें अमरकोटक अपन राजमहल मे बन्न कए देलकै। मारुइ कहैछ :

'जेना पर्वत लेल कानइ सारस,
आ सागर लेल कानइ सीप,
तहिना खने खन पिआस हमर जागइ
अपन प्रिय जन्मभूमि लेल।'

दीपशिखा लेल फतिंगा केर शाश्वत प्रेमक गान गबैत शाह 'सुर यमन कल्याण' में प्रेमी सभकें अग्निभोजक हकार दैत छथि :

'अहाँ अपना कें बूझइ छी प्रेमी, आगि सँ नहि करू डेग पाछू।
प्रियतमक प्रकाश मे धसू, अरजि लिअ वधू केर पद।
जा धरि नहि लागत धाह
आबाक रहस्य नहि बुझबै।'

एक टा प्राच्य रहस्यवादी कहने छथि : सृष्टिक पहिल दिन हम चंग स्वर मे अलौकिक संगीत सुनलौं। एहि सिंघी वाद्य यंत्र कें शाह 'सुर सोरठ' में अमर बना

देलनि। चारण बीजल राजा राय दयाच कें अपन मूड़ी कटबा लेल रहस्यमय त्याग जकाँ सहमत कए लेलनि।

सिंधक चरवाह सभक प्रिय वाद्य नड़ अपन मूल घर जंगल सँ फराक होएबा लेल पछताइत अछि। तहिना प्रियतमक हृदय अपन प्रेयसी सँ फराक होएबाक कारण कानैत अछि। शाह नड़क स्वर आ मरुभूमि में कानैत-कलपैत ससुई में सादृश्य उपस्थित करैत छथि। 'सुर माजूरी' मे ओ कहैत छथि :

'नड़ कुहरैत अछि आ अध काटल नारी कलपैत अछि
नड़ कें छै पातक आ नारी कें प्रियतम विछोह।'

योगी सभ जे सिंगा फुकैत अछि ताहि में कवि अलौकिक संगीत 'अनहद' सुनैत छथि :

'हुनका (योगी) सभक सिंगा रहस्यपूर्ण अछि
संगीत एकर जान मारि देत हमर
ऊँटक चरवाह सभक नड़ नहि थिक ई
घंटी केर स्वर नहि थिक ई
जे सूनि सुहनी धारक पार गेल।
एकर सुर ओहि चंग सँ बेसी करुण अछि
छोपि लेलक जे गरदनि दयाचक।
एहन बाजा ने सिंध ने हिन्द में अछि
जे केओ ई सुनने अछि,मधुरतम सँ बढ़ल चढ़ल मानलक
सुनि कए ओ नाद आनन्द लोक गेल
एकर गुणगान प्रभु कैलनि स्वयं
एहेन नहि आन कोनो बाजा अछि।
घंटी केर टुनटुन सँ मालजाल प्रमुदित अछि,
मानव हृदय नड़ करैत अछि चंग
भनथि लतीफ एहि सँ मुर्दा जीबैत अछि।'

'सुर सारंग' में शाह सभ सँ बेसी आनंद विभोर छथि जाहि में मानव कें सभ सँ पैघ स्वर्गिक वरदान, पावस लेल स्वागत-गान कैलनि। सिन्ध में वर्षा केर दृश्य अद्भुत होइत अछि।' 'सुर सारंग' में बिजुरी 'अलौकिक आभा' वा 'प्रभु कृपा' केर प्रतीक अछि।

'एक बेर फेर हुनक विश्वव्यापी आयोजन—
सभ दिस सभ ठाम छिटकि गेल बिजुरी;
किछु गेल इस्तांबुल, किछु पच्छिम दिस गेल;
किछु छिटकल चीन में, किछु समरकंद देखलक,
रोम, काबुल आ कांधार धरि नपलक,

किछु दिल्ली दक्कन आ गिरनार मे छिटकल
जेसलमेर किछ गेल, किछु बीकानेर बरसि गेल
किछु भिजा देलक भुज, किछु ढट पर लटकि गेल
किछु फुहार लेने आबि गेल अछि अमरकोट
हे प्रभु ! सिंध कें सम्पन्न आ ऐश्वर्यपूरित करू
हे विश्व बन्धु, संसार भरि कें सुखमय बनाउ ।'

मोती ताकइ लेल जे सागर मे धमि सकैत अछि से काँचक मुखौटा लगाकए । सूफी भाषा मे काँचक मुखौटा भेल निर्लिप्त रहब ।

'सागर मे जे धसल मुखौटा लगाकए
ताकि अनलक अतल सँ चमकैत मोती
ओकरे सभक आँखि एहन अनमोल वस्तु देखैछ ।'

सागर कवि कें मोन पाड़ि दैत छनि 'ज्योतिमय सागर', जकरा प्रेमक नहि मिझाएवला पिआस छै से ओहि मे हेलैत अछि । सदिखन सागर में रहितहुँ हुनका सभक पिआस नहि मिझाइत अछि ।

'सुन्दरता केर सागर सँ जे जन एक घोंट पीने छथि ।
अगणित दुख भरल अभिलाषा केर व्यथा सहै छथि ।'
नहि छनि मिझाइत पिआस, ओना सदिखन सागर मे रहै छथि ।

प्रियतमक दर्शन मे हुनका भेटैत छनि पिआसक एकटा मरुथल, थरक मरू मे भेटैत छनि स्वर्ग केर स्वर्णनगर—

जकर उल्लेख ओ मारूईक जन्मभूमि मलीरक रूप मे करैत छथि । मारूईक सरोकारी 'मारू' सभ ओहि नगरक अलौकिक वासी भेल ।

'ओहि ठाम कोनो बंधन नहि
ओहि ठाम न कोनो लगान ।
मारू सभ अपनहि ज्योतिर्मय
आ अछि मलीर द्युतिमान ।।'

आचार-नीति आ भक्ति

कविक नीति दर्शनक आधार थिक विनम्रता। एक टा विनयी लोक आन-आन गुण जेना धैर्य वा सहनशीलता, कृतज्ञता, विश्वव्यापी सहानुभूति आ प्रेम सँ सेहो निश्चित रूप सँ विभूषित रहत। ई सभ गुण शाह मे पूर्णरूप सँ छलनि। प्रकृति मे एहेन किछु नहि अछि जकर नैतिक सौंदर्य सँ ओ संवेदित नहि भेलाह। अपन आत्मा केर आभूषण नम्रता ओ धूरा मे ताकि लेलनि।

'जे धूरा मे अछि से आन वस्तु मे नहि।'

शाहक प्रधान आ श्रेष्ठ नैतिक शिक्षा छलनि जे कोनो परिस्थिति मे विनयक त्याग नहि करबाक चाही आ अंतरात्माक स्वरक अनुकूल काज करी। जे केओ एहि अलौकिक स्वरक प्रतिकूल नहि जैत, तकरा सँ कोनो नैतिक त्रुटि नहि हेतै, ओ स्वर्ग मे सेहो सम्मानित हैत। अध्यात्मिक विजयक अनुभव करैत ओ संसार छोड़त।

'अपन दूनू ठेहुनक बीच मुँह रखने,
नम्रता सँ दिन विताउ।
अपन अंतरक न्यायाधीश कें आसन दिअ,
संसारिक न्यायाधीशक नेहोरा किएक करब ?
घमंडी लोकक संग सँ परहेज करी,
एहि सँ नैतिक बलक ह्रास होइत छै :
'पाखंडी आ वंचक वला गप छोड़
जे 'अहं' केर गप करए तकरा सँ फराक रहू।'

व्यक्ति कें 'अहंकार' खसबैत आ धैर्य उठबैत छै। धैर्यवान जीतैत अछि, घमंडी हारैत अछि। 'अहं' कें प्रतिकार सँ नहि सहिष्णुता सँ जीतल जाइत छै।

सूनि कए निन्दा अपन, करू नहि प्रतिकार।
गुरु जे देलनि ई थिक से अनमोल विचार।
अपन मन कें जे चुपचाप मारैत अछि।

सभ टा गरिमा अरजैत अछि ।।
तामस थिक व्यथा आ सहिष्णुता कस्तूरी ।'

शाह महान कर्मयोगी छलाह । दैव भरोसे रहब (तवक्कुल) ओ अनका नहि सिखौलनि, एहि मे हुनक विश्वास नहि छल । पुरुषक कर्त्तव्य थिक काज करब आ फल भगवान पर छोड़ि देत । बाट मे हृदय-विदारक कष्ट आबि जाए मुदा दार्शनिक सहिष्णुता आ पुरुषोचित साहस सँ ओकर सामना कैल जाए, विजयश्री तखनहि अहाँक चरण चूमत । निष्कपट आ निरन्तर उद्यम सँ मन वांछित पुरस्कार भेटैत छै, आलस्य सँ नहि ।

'अथबल कें पर्वत हीरा नहि दैत अछि।'

संकटक सामना करब पुरुषक कर्त्तव्य थिक, ओकर संकट सभक निवारण दैवी स्रोत सँ हेतै । मानव उद्यम कें दैवी सहायताक पुरस्कार भेटैत छै :

'किछु हम हेलब, किछु अहाँ हेलायब ।
किछु यत्न करब अपनहु किछु अहाँ करायब ।'

जे बढ़ैत अछि ओकरहि लग सफलता अबैत छै; जे बैसल अछि तकरा कुकूरो हरा दैत छै । अथबल कें केओ सहायक नहि, आलसी कें केओ संगी नहि । जे उद्यम करैत अछि तकरा मरुभूमि कस्तूरी, पर्वत लाल, सागर मोती आवन फल दैत छै । संसार कर्मक युद्ध भूमि थिक जतए नायक जकाँ लड़ए पड़ैत छै, ततमती आ निराशा छोड़ि कए लड़ए पड़ैत छै ।

सोद्देश्य लड़निहार योद्धा लेल, जे अपन मान आ नैतिक प्रतिष्ठा लेल लड़ैत अछि, शाह आचार संहिता बना देने छथि । इमाम सभक स्मृति मे लिखल 'सुर केदारो' मे ओ कहैत छथि :

'जे योद्धा युद्धक दिन सजबै अछि समर वेश,
जकरा छै अपना जिनगी सँ मोह
अपना कें योद्धा कहय वैह टा
जे करैछ युद्धक स्वागत ।'

असली योद्धाक पत्नी कें अपन पति पर अभिमान होइत छै । वस्तुतः ई शब्द सभ कवि एकटा एहने वीर पत्नी सँ कहबैत छथि :

'सोझा सँ जौं आघात सहब तँ करबै हम अभिमान ।
लागत चोट पीठ मे तखनहि हेबै झूर झमान ।'

रणभूमि सँ भागि कए एक टा योद्धा आयल अछि एक कायर लग सुरक्षा लेल । ओकर वीर पत्नी बजैत अछि :

'हे नाथ युद्ध सँ पड़ा अहाँ हमरा करैत छी लांछित
जीवन तँ अछि छोट किन्तु कलंक चिर स्थायी ।'

एक टा उपदेश ओ सभ कें दैत छथि—राजा, फकीर, योद्धा, मलाह सभ कें ।

पाखंडी संन्यासी कें ओ कहैत छथि :

'ओ अछि प्रभु सँ बड़ दूर जकरा भोजन वस्त्रक चिन्ता छै
किए छेदाओल कान ? किए नहि मुण्डे कटवा लेल ?
कान मे पहिरलौं कुण्डल जे सुख सँ जीवि सकी ।'

प्रकृति निष्क्रिय कें कोनो संरक्षण नहि दैत अछि । कर्महीन पुरुष कें प्रकृति सँ पाठ लेवाक चाही । प्रकृति मे सभ वस्तु सक्रिय अछि—सूर्य, चान, तारा, सागर नदी—सभ किछु अनवरत चलैत वा काज करैत अछि । सृष्टिक मुकुट पुरुष किएक एना आलसी बनल ईश्वरक देल शक्ति जियान करत ?

'तारा आ नदी विराम नहि जनैत अछि ।
विनु उद्यम भेटए जे नीक अहाँ कें लगैत अछि ।।
राति भरि सूतल अहाँ जौं रहब
अध्यात्मिक सम्पदा अरजब कोना ?'

स्वर्ग सँ मानव अनमोल मोती आ आभूषण लेने आएल अछि, ओकर एक-एक साँस अनुपम लाल छैक । अपन एहि अनमोल सम्पदा कें नष्ट कए एहि संसार सँ विदा भेला पर व्यथा हेतै—महाजनक सोझा अपन अध्यात्मिक दिवालियापन पर लाज हेतै ।

'हजार लाख ओहिना गमाओल अहाँ ।
तैओ एखन धरि ओंघाएल छी ।'

असली सोना आ आभूषणक स्वामी मानव काँच आ सीसाक व्यापार करैत अछि । जे नोनक व्यापार करत तकरा कस्तूरी कोना भेटतै ?

'अहाँ नोनक व्यापार कए चाहय छी कस्तूरी !'

ओकरा ओहि अक्षय वस्तुक व्यापार करबाक चाही जकर एकटा कण अनन्त काल धरि नहि घटैत छै ।

'ओहि वस्तुक व्यापार करू जे समयक संग घटए नहि ।
आभा जकर स्वर्ग मे घटए नहि ।
राखू एहने कोष अरजि जे सकय अखंडानन्द ।'

मानव कें विश्व बंधुत्वक पाठ पंछी सँ सिखबाक चाही जे सिनेह आ प्रेम-भाव सँ प्रायः संग उड़ैत अछि ।

'प्रेमक बंधन नहि तोड़ए, उड़इछ हेंज मे ।
मानव सँ बेसी छै सामंजस्य पंछीक हेंज मे ।।'

मानव सँ बेसी सहानुभूति खढ़ मे छै। धारक कछेड़क सूखल गाछ डुबैत लोकक प्राण बचा सकैत अछि जौं ओ संकटक क्षण मे ओकरा अपन मुट्ठी सँ पकड़ि लेत । खढ़ मजगूत भेलै तँ लोक कें बचा लेतै, कमजोर भेलै तँ उखड़ि कए ओकरा संग भासए लगतै । संकट मे पड़ल लोकक सहायता करबाक आ सहानुभूतिक

एहि सँ नीक भावना की हेतै? मनुष्य कें खढ़ सँ विश्वसनीय बनबाक पाठ सिखबाक चाही।

'अछि पर-उपकारी घास केहन?
डूबैत लोक कें लगा देत ओ कात
नहि तँ ओकरहि संग भासत धार मे।'

मानव जीवन छाँह मात्र थिक—सभ चटक-मटक एक दिन बिला जाइत छै। तैं मानव प्रभुक सेवा मे लागि जाए—हुनका ताकए, हुनक दास बनि जाए।

'लातक नीचा केर माटि, झँपने अछि बहुतक अवशेष
देखने छी हम सभ महा प्रतापी सभक पतन
भनथि लतीफ छोट जिनगी —जागू आ ताकू।'

आत्म-शुद्धि आ प्रभु निमित्त हृदयक समर्पण प्रभु सेवा थिक। पूजा लेल शाहक धारणा छनि—

'तन मंदिर, मन थिक भजनालय,उपवास किएक करै छी?
नहि अहाँ किएक दिवस-रजनी पूजा प्रभु केर करै छी?
जेम्हरे तकबै देखबनि हुनका···'

शाह लेल ई संसार विशाल पूजा-स्थल थिक, संसारक समस्त सजीव-निर्जीव हुनका लेल दिव्यता केर प्रकट रूप थिक। आनन्द लोक मे कोनो धार्मिक विरोध वा विसंगति नहि छै।

'छनि जतए निवास जगत्पति केर, नहि ततए विसंगति
तोरण थिक हुनकर मुखमंडल, मंदिर ई भरि संसार
सभ बुद्धि विवेक एतए बनले बेकार
जे छथि सभ ठाम कतए दण्डवत करी तनिका।'

पुनश्च :

'तोरण थिक जनिकर ठेहुन, आ देह जनिक शुभ मंदिर
अछि तनिकर कोन हिसाब जे हुनकहि मे अन्तर्हित।'

प्रेम, रहस्यवाद आ अनुभूति

प्राच्य कवि-परम्पराक अनुरूप शाह कें प्रेम सँ प्रेम छनि—ओ रहस्यमय शक्ति, जे रूमीक शब्द मे, पर्वत कें नचा दैत छैं। एहि पुनीत भावक उल्लेखहि सँ :

'पर्वत गतिशील भए नाचए लगैत अछि।'

प्रेमगान करैत शाह आनन्द विभोर छथि :

'प्रेमक प्रशस्ति गान कए नहि सकब हम,
करिते उच्चारण हम होइत छी वेसुध।'

ओ पुनः कहैत छथि :

'प्रेमक पीड़ा आ उत्कंठा दूनू अनन्त।
प्रेमक सीमा नहि, प्रेम न जानए अंत॥'

प्रेमक पिआस रहस्यमय छैं—ओहि पिआस कें समस्त सागर पीबि नहि मिझाओल जा सकैछ :

'सेदल, डाहल, भूजल जाइत, हम आकुल भेल तकै छी
प्रियतमक पिपासा अन्तर मे, जकरा नहि मिझा सकै छी'

हम जौं समस्त सागर पीबि जाइ, तैओ हमरा एक घोंट हैत। एक-एक घोंटक संग ई पिआस आर बढ़ैत छैं—एहि पिआस कें मिझा सकैछ पिआस !

'अछि भरल प्रेम सँ जे जन, शाश्वत प्यास तकर
तृष्णा घट सँ छाकू, प्यासहि सँ प्यास लहरि जाएत।
हे प्रियतम ! दिअ एक घोंट प्यास
प्यासहि सँ प्यास मिझाए सकी।'

दोसर शब्द मे, प्रेमीक पिआस तखनहि मिझा सकतै जौं प्रेयसी कें ओकरा लेल ओतबे पिआस होइ। बलिदानक दोसर नाम भेल प्रेम :

'प्रेमक मदिरा केर एक बुन्न अनमोल—प्रेम बलिदान'

प्रेम नुकाकए रखबाक कला कुम्हारक आबा सँ सीखी जे जरैत अछि मुदा धुआँ वा भाफ नहि निकलैत छैं। असंख्य विघ्न बाधा पर प्रेम विजयी होइत अछि—संसारक समस्त सागर प्रेमी हृदय कें अंकुश नहि दए सकैत अछि। प्रेम

असीम अछि, मिलन अनंत सँ वेसी दूर अछि :

'अन्तिम दिन धरि जौं मिलन होए, बूझब प्रियतम कें पास
मिलनक उत्सव अछि आर अधिक दिन दूर।'

शाह विरहक कवि छथि—प्रेमक अनन्त पिआस में हुनक आस्था छनि : 'जे विरह मे भेटैत छै से मिलन मे नहि' ओ कहैत छथि। विरह मे पिआस रहैत छै, जकरा मिलन मिझवै छै।

'ताकैत रही हम किन्तु अहाँ के नहि पावी
हमरा देहक नहि कोनो रोम सँ उत्कंठा छूटए
घुरि आउ विरह ! बनि रहल मिलन पर्दा अछि
हुनका अवितहि मरि जाइत अछि जीवंत घाव
घावक मरितहि मरि जाइत अछि उत्कंठा'

शाहक प्रियतम केर सौंदर्य आ कांति ब्रह्मांडक समस्त सौंदर्य आ कांति के मलिन कए दैत अछि।

'मद-मातल दृष्टि उठौलनि जखनहि प्रियतम,
रवि रश्मि मलिन, चन्द्राभा गेल हेराय,
नतमस्तक ग्रह, नक्षत्र, सकल तारा मंडल
रत्नहुक ज्योति प्रियतमक कांति सँ मलिन भेल।'

धरती ओहि बाट कें चूमैत अछि जाहि ठाम प्रियतम बुलैत छथि। परी हुनक अभ्यर्थना करैछ :

'प्रियतम छथि जखन चलैत मनोरम चालि अपन
धरती प्रभु केर गुणगान करैत चुमैछ बाट
हुनका सौंदर्य चकित भेल अछि ठाढ़ि परी सभ
हे प्रभु ! प्रियतम मे अतुलनीय आकर्षण छनि।'

प्राच्य जगतक सूफी कविगणक दर्शन प्रायः विख्यात अरबी कहबी : 'इश्क मजाजी ओ सेतु थिक जे इश्क हकीकी दिस लए जाइछ' पर आधारित अछि। एहि रहस्यवादी उक्ति मे निहित भाव कें शाहक गाथा सभ सत्यापित करैत अछि।' 'सुर आशा' मे ओ अपन रोमांटिक कथा सभ मे गुम्फित तत्त्व कें फरिछ देने छथि। सिद्धांत कें ओ प्रयोग मे अनलनि—

प्रेक हुनक अपनहि जीवन लेल शुचिकारक बनल—

'जेना धुनिआ धुनैत अछि तूर, प्रेम हमरा धुनलक।
हाथ हमर भेल अपरोजक, अंग-अंग शक्तिहीन भेल।'

एहि सुर मे ओ साधक कें दैहिक आँखि सँ नहि देखबाक उपदेश देलनि, जे भ्रमित करैछ।

'नहि देखू एहि दैहिक आँखि सँ
जे लागल अछि मुँह मे ।
प्रियतम केर दर्शन नहि हैत एहि आँखि सँ,
जे लैत अछि मूनि दूनू आँखि,
अछि प्रियतम के देखैत वैह,
मरणशील के नहि करू प्रियतम
अलौकिक प्रियतम कें किएक नहि तकैत छी ?'

'सुर आशा' मे शाह अपन व्यक्तित्व सोझे प्रकट कैने छथि । एहि मे ओ मूमल वा ससुई वा लीला वा नूरीक स्वांग नहि कए कोनो व्यंजना बिना सत्यान्वेषक आ अनुभूतिपूर्ण पुरुष जकाँ प्रकट होइत छथि ।

'सत्य इमर हृदय कें कए देने अछि दू फाँक ।
प्रियतमक विना नहि जीबि सकब हम क्षण भरि ।
एकाधिकार अछि हमर हृदय पर प्रभु केर ।'

परमात्मा सँ एकाकार भए हुनक चिंतन ओहि आनन्द लोक धरि जाइत अछि जतए दिक आ कालक बंधन नहि छै । ओहि ठाम नश्वर इन्द्रिय काज नहि कए सकैछ—अवर्णनीय आश्चर्यजनक लोक जतए 'अस्ति' वा 'नास्ति' नहि छै। ई कोनो लौकिक मानदण्ड सँ नापल आ नश्वर आँखि सँ देखल नहि जाए सकैछ । मानवीय मेधा ओहि ठाम काज नहि करैत छै, बुद्धि आन्हर आ पंगु बटोही भए जाइत छै ।

'एहि आश्चर्य जगत में मानव बुद्धि किछु नहि बूझए
परमात्मा केर सौंदर्यक झाँकी नहि दृग सँ सूझए

'स्व' 'स्व' केर पर्दा थिक—आत्मानुभूति मे बाधक होइत अछि अहं :

'हे साधक ! अहं अहाँ के प्रियतम सँ करए फराक
पर्दा उठितहि संदेह शून्य मे विगलित हैत अहाँक !'

'सुर आसा' मे शाह 'शुद्ध अहं' केर चर्चा करैत छथि जे सभ स पैघ आध्यात्मिक उपलब्धि थिक । मिथ्या अहं मानवक अभिशाप थिक जे ओकरा पतनोन्मुख करैत छै । मानव लेल परमात्माक सभ सँ पैघ वरदान थिक 'शुद्ध अहं' जे आत्मानुभूति सँ अबैत छै । ओहि अलौकिक ज्योति-शिखरक उत्तराधिकारी अछि मानव । शुद्ध 'अहं' केर स्वर परमात्माक स्वर थिक । शुद्ध अहं आ दिव्य अहं समतुल्य अछि—मिथ्या 'अहं' निरर्थक अछि ।

'अहं सँ अहं जनमैत अछि, ओकरे ओ शोभैत छै
एहि 'अहं' केर आशीष सँ शुद्ध अहं होइत छै ।'

सत्यवादी ई कहि सकैछ, साधारण लोक नहि । जकरा आत्मानुभूत भेल छै तकरा सांसारिक प्रशंसा नहि चाही, ओ समस्त मानवीय स्तवन सँ उप्पर अछि ।

प्रशंसा योग्य वैह अछि जे परमात्मा सँ एकाकार भए गेल ।

प्रशंसा कें अग्राह्य कए ओ उपर उठि जाइत अछि परमात्मा जतए छथि, आनक अस्तित्व नहि—

'अथाह प्रेमवारि मे छथि डूबल ओ
जनिका छनि भेल आत्मानुभूति'

तखन हुनक देह माला आ मन भए जाइछ मनका, हृदय वीणा, जाहि सँ दिव्य संगीत निसृत होइछ । हुनक नस नस गाबि उठैछ : 'ओ अद्वितीय छथि' । एहन लोक सूतल रहितहुँ जागल अछि, हुनक सुसुप्ति सचेत जागरण थिक ।

'देह माला, मन मनका, हृदय वीणा जकर
जनिक 'नस नस गवैछ' अनुपम छथि ओ
निन्न रहितहुँ अछि जागल चिन्तन निरत'

कबीर जकाँ अपन आध्यात्मिक अन्वेषणक अंत मे शाह 'असीम लोक' मे प्रवेश करैत छथि आ देखैत छथि जे प्रियतमक सौंदर्य कल्पनातीत अछि ।

'हम ताकइ छी हुनका अनंत मे
हम देखइ छी ओ छथि अपनहि अनंत
हुनक छवि केर वर्णन असंभव बुझू
एतए अभिलाषा हमर अछि असीम
ओमहर हुनका तं कोनो सुधिए नहि छनि ।'

मिथ्या अहं शुद्ध अहं लेल बाधा थिक—आत्म-चेतना आत्मानुभूति लेल पर्दा थिक । आत्म-चेतनाक, फराक अस्तित्वक अन्त होइतहिं, शुद्ध चेतना, आत्म जागृति आ तखन सांसारिक सन्देह आ बाधा सभ कुहेस-जकाँ बिला जाइत छै ।

'हे साधक ! अहं सँ चेतल रहू
प्रभु सँ एक होएबा मे बाधा अछि ई,
हे साधक सुनू, 'अहं' पर्दा थिक 'स्व' लेल
जखन पर्दा हटत, विघ्न बाधा कटत ।'

पुनश्च :

'हम सभ अपनहि छी ओ, अछि पिआस जाहि ले
हम चिन्हलौं प्रियतम कें, सन्देह तों पड़ा
हम सब वैह छी, जकरा लेल अभिलाष अछि
ओ अजन्मा अछि, ओ जन्म नहि दैत अछि ।
एहि रहस्य के छेहानू !
देखबै जौं ठीक सँ प्रभु कहवै सभ जीव कें
हे आन्हर ! एहि सत्य पर संदेह नहि करू ।'

दैनिक प्रार्थना सँ सत्यानुभूति नहि होइत छै—एहि सँ अहंकार होइत छै जौं

अपन कर्मकांडक प्रति वेसी सचेत होइ। जाहि प्रार्थना मे अहं केर लेश होए से स्वर्ग मे नहि सुनल जाइत छै, ओहि सँ लाभ नहि ।

'जा धरि सुधि रहत स्व केर
अहाँक प्रार्थना किछु नहि थिक;
स्व केर सकल विचार छोड़ू
'प्रभु महान छथि ग्रहण करू
जा धरि सुधि रहत स्व केर
दण्ड प्रणाम किछु नहि थिक
गमा दिअ अप्पन परिचय
आ ध्यान करू 'प्रभु छथि महान्'

अन्त मे शाह कहैत छथि :

'परमात्मा नहि आत्मा सँ फराक
आत्मा नहि परमात्मा सँ फराक
हम मानव केर आ मानव हमर रहस्य
बूझि लिअ ई सत्य ।
सत्यक ज्ञाता सभ यैह गवैत विदा भेलाह ।'

स्पष्टत: मानव दास आ प्रभु स्वामी छथि—किन्तु जतए प्रेम छै ततए स्वामी आ सेवक मे कोनो अन्तर नहि । एहि रसायन सँ सेवक स्वयं स्वामी बनि जाइछ। आ अपन स्वामी जकाँ अनन्त भए जाइछ :

'सेवक भए जाइछ अनादि अनन्त;
प्रियतमक भेलै जकरा दर्शन, हुनकहि सँ तादात्म्य भेल'

आत्म बलिदान सँ सेवक बनि जाइछ स्वामी आ तखन आत्मा परमात्मा मे अन्तर नहि रहि जाइछ ।

'आत्म बलिदान सेवक कें गरिमाक शिखर धरि उठा दैत छै ।
साधक अपनहि थिक सत्य आर पुनि अनुकृति
अछि प्रियतम केर रहस्य वर्णनातीत ।'

एहि अति सचेत स्तर पर विचार करैत शाह विनम्र आत्म स्वीकृति मे अपन सीमा गछैत छथि । अस्ति-नास्ति सँ फराक लोकक विवरण दैत ओ कहैत छथि :

'नहि जतए 'अस्ति' वा 'नास्ति' छैक—माटिक मुरूतक विचार
प्रियतम केर छवि मानवक बुद्धि सँ बाहर अछि
नहि जतए 'अस्ति' वा 'नास्ति' छैक···
प्रियतम केर छवि मानवक दृष्टि सँ बाहर अछि ।'

केहनो अध्यात्मिक गरिमा सँ भूषित मानव ससीम अछि, प्रभु असीम छथि ।

ससीम असीम कें नहि बूझि सकैछ। केहनो आध्यात्मिक ज्ञान वला परम रहस्यक एक केश नहि सोझरा सकल :

'गौरव मंडित नहि. विदा भेल सभ आशहीन
दाना एकटा उठा लेलक, उड़ि गेल
एहि घाटी मे ओ सभ किछु नहि
बुलबुल्ला छल।'

व्यापार, वाणिज्य आ सम्पत्ति

सुर श्री राग आ सुर सामुण्डी मे शाह सिन्धी व्यापारी सभक वाणिज्य अभियान केन दोन वला वस्तु, व्यापारिक सम्पर्क वला स्थान, जाहि ऋतु मे अभियान होइत छल, विभिन्न प्रकारक नाह सभक उल्लेख कैलनि। विभिन्न सुर मे ओ किछु प्रमुख वन्दरगाह आ कर ओसूली वला स्थान सभक सेहो चर्चा कैलनि। किछु सुर मे स्थल मार्ग सभ आ आन जनपद सँ केन दोन होएवला वस्तु सभक वर्णन अछि। एहि व्यंजना सभ मे निहित प्रतीक ततेक स्पष्ट अछि जेना पाटल मे सुवास वा मेघ मे पानि।

सुर श्री राग मे पोरबन्दरक उल्लेख अछि जे एहि वातक संकेत थिक जे सिन्धी वणिक सभ कें सागर पथ सँ पश्चिमी तटस्थ भारतीय वन्दरगाह सभ सँ सम्पर्क छलनि। अरब सागरक दुरूहता सुदूर अभियान सभ सँ कम नहि छल।

'दुर्वल केर नाह केर अहाँ रखवार।
हे प्रभु! पहुँचा दिओ एकरा पोरवन्दर॥'

सागर मे सोझे बिहाड़ि नहि छलै—प्रचंड वसात एकर विकटता आर बढ़ा देलकै। मुक्ताक आकर्षण सिन्धी व्यापारी सभ कें अदन सन सुदूर ठामक अभियान लेल प्रेरित कए प्रभु मे विश्वास आ अपन साहस सँ सभ संकट के सामना करवैत छल। सोनक आकर्षण हुनका सभ कें श्रीलंका आ सुदूर ठाम में पठबैत छल।

'प्रभुक कृपा सँ जीति लेलनि ओ सभ बिहाड़ि,
जूमल ओ सभ अदन, प्रभु केर नाम रटैत,
लंकाक सोन समुद्रयात्री सभ कें बेचैन कैने अछि
सदिखन एके टा छै टेर लंका, लंका।'

दामी पाथर, नीक वस्त्र आ बहुमूल्य वस्तु सभक व्यापारक सिन्धी व्यापारी सभ विशेषज्ञ छलाह। जाड़क मास सागर-पथ सँ जाए वसन्त मे ओ सभ नदी मार्ग सँ आपस होइत छलाह। विरह मे कनैत-कलपैत हुनका सभक घरवाली सभ नित दिन सागर कें सुवासित चाउर चढ़बैत छलि। धार मे माटिक दीप दैत छलि आ हुनका सभक सकुशल आपस होएबा लेल करुण भावें विनती करैत छलि। लंगर

उठाओल जेवा सँ पहिनहि ओ सभ करुआरि सँ लपटि जाइत छल आ अपन-अपन पति सँ हिचकैत फराक होइत छल।

ससुई सँ सम्बद्ध सुर सभ मे सिंध आ केच (ससुईक प्रेमी पुन्हूँक जन्मभूमि) क बीच इत्र सभक व्यापारक उल्लेख अछि। ससुईक जन्मभूमि भंभोर ओ आएल छल इत्र बेचइ लेल जे नगरक बसात के अद्भुत सुरभि सँ भरि देलकै। ओ सभ जाहि तीव्रगामी सुन्दर ऊँट पर चढ़ल तकरा हीरा मोती आ कृत्रिम फूल सभ सँ सजाओल गेल छल। मकरान आ सिंधक बीच केर बाट मे तेहन मरुभूमि जंगल आ पहाड़ सभ छलै जे बीछल नस्लक ऊँट सभ सेहो आकुल भए जाए। रेलपथ बनवा सँ पहिने तीव्रगामी ऊँट सभ परिवहन आ वाणिज्य लेल अनमोल सेवा दैत छल। स्थल आ जल मार्ग सँ आयात-निर्यात होमए वला वस्तु सभ छल—कपड़ा, सोना, आभूषण, इलायची, लौंग, गंध द्रव्य आ फूल काढ़ल वासन सभ।

सुर मूमल राणो, सुर मारुई, सुर लीला चनेसर, सुर कामोद, सुर बिलावल आदि मे शाह सिंधक वैभव, सामन्त परिवार सभक विलासपूर्ण जीवन आ शासक वर्गक दानशीलता पर प्रकाश देने छथि। राज परिवारक नारी वृन्द कोना पसाहनि करैत छलि, शासक वर्ग कोना अपव्यय करैत छल आ अति साधारण लोकक सहायता करैत छल से एहि सुर सभ मे नीक जकाँ चित्रित अछि। मूमल आ सखी सभक सौंदर्य आ पसाहनिक प्रसंग कहलनि—

'ओकरा सभ केर परिधान छलै पाटल सन'

पाटलवर्णी रमणी सभ जे हरिअर शाल ओढ़ने अछि से पाटल केर स्वाभाविक सुषमा उपस्थित करैत अछि। ओहि मानवीय पाटल सभ सँ कस्तूरी आ अंबीरक सुगन्ध बहराइत अछि। हुनका सभक देह में सभ सँ सुगन्धित फूल सभक इत्र लेपल छनि। हुनका सभक खाट ओछाओन सेहो कस्तूरी सँ सुवासित अछि। कान आ बाँहि सभ सोन रूप सँ आभूषित—ओ सभ एहेन दिव्य मुरुत-सन लगैत अछि जकर पूजा-आराधना सुदूर ठामक राजकुमार सभ करैत छथि। मूमलक महल मे स्नान-घर सभ सेहो सुवासित छैक, ओ आ ओकर सखी सभ अपन देह आ केश तेना सुवासित कैने अछि जे प्राच्य देशक कोनो सम्पन्न उद्यान मे होएबाक भ्रम मे भौंरा मडराइत अछि :

'ओकरा सभ केर परिधान छलै पाटल सन
केशक लट चमेलीक तेल मे डुबाओल
प्रेमहुक हृदय मे टीस जगाबइ रूप ओ
माधुर्यमयी सभक पसाहनि सँ छगुन्ता भेल बौक;
शाल ओकरा सभक छै पान-सन हरिअर
इत्र आ अंबीर सँ धोने अछि देह
चानन छै लेपल अलक-जाल मे

कान मे छै सुशोभित रजत आ कनक
कनकवर्णी खेलाएलि रजत-राशि सँ
कक्ष बनले सुवासित अगर सँ
खाट मे गंध मृगमद केर :
स्नानघर मे पखारए चानन माथ सँ
आ ओहि ठाम मडराए भौंरा क दल
प्रेमी जनकेर आँखि सँ नोर जकाँ शोणित बहए ।
प्रेम आहत केने छल हृदय कें तेना ।'

मूमल आ ओकर सखी सभक प्रसंग जे किछु कहल गेल से तत्कालीन सामन्त सभक विलासमय जीवनक प्रतिविम्ब थिक । मूमलक 'काक महल' केर कक्ष सभ मे सुन्दर पलंग सभ पर रेशमी ओछाओन आ मखमली गद्दा सभ छलै । महलक वाटिका मे वसन्त जेना सम्हरल आएल छल। ई सभ मुगलकालीन बाग केर स्मरण दिअबैछ—सिन्धी सामन्त सभ तकरे नकल कैने छल ।

'सुर लीला चनेसर' क कथा हीराक एक बहुमूल्य हार पर आधारित अछि—ओ गहना जे रानी आ राजकुमारी सभ कें होइत छनि, आ जे हुनका सभक वांछित वस्तु थिक। एहि सुर मे ओहि युगक सामन्ती रमणी सभक पसाहनिक विवरण अछि—कान मे सोनक वाली, गरदनि मे जटिल कारीगरी कैल हार; सुरमा कारी आँखिक जादू बढ़ा देने छल आ दुर्लभ प्रकारक तेल केशक सुन्दरता बढ़ा देने छलै । 'सुर मारुई' मे विभिन्न प्रकारक वस्त्रक उल्लेख अछि—ऊनी शाल, डोरिया रेशमी कपड़ा (एलाची); गुलाबी रंगक वस्त्र (खुहिबा), नीलाम्बर (अबीर), ऊनी वस्त्र जकरा 'अराम' कहल जाइत छै आ विख्यात रेशमी वस्त्र पट चीर । पुलाव आ शर्बतक उल्लेख छै—दूनू रईसी खान-पान आ मदिराक प्रतीक ।

'सुर कामोद' 'सुर प्रभाती' आ 'सुर बिलावल' मे सिन्धी शासक सभक दान-शीलता आ सहायता भावना (भनहि अतिशयोक्ति होए) केर साक्ष्य भेटैत अछि ।

राजा जाम तमाची कें मलाहक बेटी नूरी सँ प्रेम भए गेलनि । ओकरा आँखि मे जादू आ हृदय मे आश्चर्यजनक विनय छलै । ओकरा सँ बिआह कए तमाची ओकरा सरोकारी आ जातिक लोक सभ कें हीरा, मोती, सोना, चानी, लाल आ मणि सभक सनेस देलनि—ओकरा सभक खोपड़ि मे ओ इत्रक बोतल सभ उझीलि देलनि :

'मलाह सभक बीच मे बैसल
हाथ में ओ लेलक हीरा ।
दुर्गन्ध तखनहि सटकलै
इत्र जखन लागल ओ ढारए
दामी सनेस तेना बिलहलक

'जेना बिलहैत हो फल-मूल
हीरा-मोती तेना छिड़िऔलक
जेना छिडिआ रहल माछक खोइचा
रतन बिलहलक आ सधा देलक कोष
निर्धन कें देलकै ओ नीलमणि
सभटा अनमोल पाथर ओ फेकलक।'

लसवेलाक शासक सपड़ सखीक दानशीलताक उल्लेख पहिनहि भेल। सपड़ सखी बीछल अरबी नस्लक एक सय घोड़ा एक अति साधारण चारण कें देलनि। चारण निष्कपट आ निरीह छल। सिन्धक महान-समा शासक जादम जखरोक अपूर्व गुणगान कैने छथि :

'जतए जादम बनाओल गेल, माटि छलै ओतबे'

पुनश्च :

'जादम के देखने नहि मन पड़ए आन
भेटि जाए जखन एक निर्झरिणी
की प्रयोजन इनार खुनबा केर।'

किन्तु राजकीय दानशीलताक उत्कृष्ट उदाहरण छथि राय दयाच जे चारण (बीजल) केर नड़ सँ संवेदित भए अपन मूड़ी कटा लेलनि।

शाह कथा सभक महत्त्वपूर्ण प्रसंग टा लेने छथि। नायिका सभक विभिन्न मनोभावक संगहि सभ स्थितिक पृष्ठभूमि केर ओ शब्द-चित्र राखि देने छथि। शाहक कोनो कथा पढैत काल हुनक भाषा केर जादू भरल शक्ति सँ परिस्थिति विशेषक वातावरण वा दृश्यगत पृष्ठभूमि अंतःचक्षु सँ देखल जाए सकैछ।

नायिका शाह अपनहि बनैत छथि, नायिका कविक माध्यमें लोक सँ गप करैत अछि। जखनहि नायिकाक दू उक्तिक बीच अंतराल भेलै कवि घटना स्थिति वा नायिकाक मनःस्थिति पर प्रकाश दैत छथि। जतए दू पात्र छै, जेना सुर सोरठ मे—राजा राय दयाच, चारण बीजल—कवि व्याख्याकार बनि जाइत छथि।

सभ सुरक अंतिम दास्तान (सर्ग) मे, अर्थात् सभ सुरक अंत मे ओ पार्थिव सँ आध्यात्मिक धरातल पर चलि जाइत छथि। सुर मूमल राणोक अन्त मे मूमल कहैत अछि :

'कोमहर हम ऊँट कें हँकबै ?
चारू दिस छैक महा ज्योति
काक अछि हमरहि अन्तर मे
आ हमरहि अन्तर मे उद्यान
आन किछु नहि कतहु छैक
कण-कण बनल छै राणो।'

कथोपकथन, मनोभावक अंकन, दृश्य सभक वर्णन आ चरित्र-चित्रण सभ किछु हुनक कथा मे अछि। एहि दृष्टि सं उत्कृष्ट उदाहरण अछि 'सुर सोरठ' जाहि मे कवि राजा आ चारणक वार्तालाप मे विशेष कला देखौने छथि।

'सुर कामोद' मे प्रस्तुत तमाची आ नूरीक कथा कें छोड़ि 'रिसालो' क सभ कथाक पात्र कें व्यथा छै। सभ कथा मे भाग्य सँ पुरुषार्थमय संघर्ष आ एहि असमानक बीच होइत संघर्षक निरर्थकता मुख्य विषय वस्तु-थिक।

शाहक 'सुर केदारो' प्रमाणित करैत अछि जे शाह युद्ध काव्य सेहो पूर्ण कौशल सँ लीखि सकैत छलाह। काव्यक कोनो विधा वा शाखा नहि छल जाहि मे ओ

उत्कर्ष नहि देखौलनि । 'सुर केदारो' मे हुनक पाती सभ मे शौर्य-पराक्रमक प्रतिध्वनि अछि ओ कोनो युद्ध मे नहि उतरल छलाह, किन्तु हुनक उपमा सभ पर रणकौशलक छाप अछि । हुनक युग दाव-पेंच आ घात-प्रतिघातक युग छल तै सैन्य गतिविधिक अंतरंग ज्ञान छलनि । क्रूर नादिर शाहक आक्रमण ओ देखने छलाह । हुनक युद्ध काव्य केर दर्प आ शौर्य सानल भाषा केर यैह सभ कारण थिक । 'सुर केदारो' एक महान शोक-गीत थिक । एहि मे शाह कर्बलाक रणभूमि मे इमाम हुसैनक बलिदानक करुण भाव सँ वर्णन कैलनि । सिन्धी काव्य मे एहेन कारुणिकता आन ठाम नहि अछि । ओना मुख्य विषय थिक कर्बलाक मैदान मे इमाम हुसैनक बलिदान, पुरुषार्थवान सभक सोझा कवि पैघ आ शाश्वत मूल्यक आदर्श रखलनि, प्राचीन युद्ध-कला आ सैन्य पराक्रम केर स्पष्ट चित्रांकन कैलनि :

'हे वीर शिरोमणि ! जीवन भरि
रण उत्सव मे लोहित मदिरा पीबैत रहू ।'

ओहि युगक युद्ध व्यक्तिगत शौर्य पराक्रमक परीक्षा छल—सोझा-सोझी लड़ैत योद्धागण अपन साहसे टा नहि विभिन्न अस्त्र-शस्त्र संचालनक श्रेष्ठ कौशल—जेना भाला, कुरहड़ि, कटार, तरुआरि, गदा आदिक संचालन प्रदर्शित करैत छलाह । युद्ध आरंभ होएवा सँ पहिने तासा आ दमामा बजैत छल जे योद्धा मे आर बेसी साहस आबि जाइ, तखन रोष आ आक्रोश सँ युद्ध करैत छल । ओहि युग मे युद्ध सँ पहिने शंख, दुन्दुभि-शहनाइ, नगाड़ा आदि बजैत छल ।

'चान अस्त होइतहि वीर गण विदा भेलाह
संग छलनि शिकरा, कुरहड़ि, खंजर आ तासा
भेटलाह वीर सँ वीर, तरुआरि उठल झन-झन कए
ललकार दैत आघात भेल, लगलै ढेरी शव केर
योद्धा खसलै आ मूड़ी नाचए लगलै भू पर
रण भूमि भेलै पूरित भय रव सँ
ललकार एम्हर प्रतिकार ओम्हर
दूनू दिस शहनाई दुन्दुभि केर निनाद
घोड़ा सँ योद्धा केर भेलै बिआह
कुरहड़ि तरुआरिक पालिस भेलै
लागि जाए नहि जंग.
नहि वीर सभक भाला कान्ह सँ हँटलै
मरणोत्सव मे सदिखन रहैत सावधान
योद्धा सब अश्वारोही आर गजारोही
गज केर क्षत सँ बनलै रक्त निर्झर'

एहि सुर मे शाह वीरताक भव्य आदर्श स्थापित कैने छथि । असली योद्धा ओ

थिक जे प्रभु लेल लड़ैत अछि, आ रणभूमि मे एक तिल भरि विचलित नहि होइत अछि। 'जीवन छोट अछि किन्तु कलंक स्थायी अछि,' ओ कहलनि। रणभूमि सँ पलायन कए योद्धा प्राण बचा सकैत अछि, मुदा ओ सभ दिन लेल अयशी हैत। प्राण बचा लेने की लाभ (जे पंछीक उड़ान जकाँ क्षण कालिक अछि) जे अशेष अयशमय भए जाए ?

'जकर पति रणभूमि मे प्राणक चढौलक भेंट
शोक आ अभिमान सँ सभ गीत गबइछ :
'सखी ! पुरखा सभ हिनक अछि भेल
गौरव सँ समन्वित।'

कथा सभक प्रतीकवाद

प्रतीकवाद शाहक काव्य केर आत्मा थिक। रिसालो मे एहेन कोनो सुर नहि अछि जकर तानी-भरनी मे सूफीवादी प्रतीक सभक ताग नहि होए। शाहक कथा सभ मे दू प्रकारक प्रतीक अछि : मानवक ईश-अन्वेषण आ जीव विशेष लेल प्रभुक सिनेह। ई दुधारी प्रतीकवाद विभिन्न मनोरम उपमा-उपमेय सभ आ रूपक सँ चित्रित कैल गेल अछि।

शाह लतीफक प्रेमाख्यान सभ मे साधक नायिका आ प्रभु नायक छथि। साधक कखनो लीला, मूमल, सुहनी, ससुई, नूरी आमारुई; तहिना प्रभु चनेसर, राणो, मेहार वा साहिर, पुन्हूँ, तमाची आ मारू (खेतसेन) बनैत छथि। साधक लेल दू प्रकारक शत्रु छै—आन्तरिक आ वाह्य। मन आ संसार (एकर प्रलोभन सभ) ओकर दू टा आन्तरिक शत्रु भेलै।

ससुईक कठिन आ कष्टप्रद स्थिति सँ सम्बन्द्ध सुर सभ मे शाह देखबैत छथि जे पर्वत मरुभूमि, झरना, जंगल सभ असली साधकक साधना लेल कोनो बाधा नहि थिक। दोसर शब्द मे असली साधक कें केहनो हृदय विदारक विघ्न-विपत्ति नहि ठमका सकैत अछि। पुन्हूँ केर जन्मभूमि केच स्वर्गस्थित स्वर्ण नगर थिक, सत्यान्वेषक सभक गंतव्य। हाड़ो आ पब पहाड़ हब नदी आ विशाल मरुभूमि साधना पथ मे आबएवला विघ्न सभक प्रतीक भेल। एहि एकसरुआ यात्रा मे साधक कें विघ्नबाधा सभ सँ साहसपूर्वक लड़ए पड़ैत छै। एहि यात्रा मे साधक एकसरे रहैत अछि ततवे नहि कोनो सांसारिक पदार्थ वा प्रतिबन्ध नहि रहैत छै एकमात्र सहयात्री प्रेम, प्रगाढ़ प्रेम :

'जकरा नहि बोझ छलै पार भेल हाड़ो,
बोझ छलै जकरा से रहल छल जतहि,
जैत छूछ हाथ वैह प्रियतम कें पाओत
कैने पसाहनि मिलन सुख गमाओत'

एहि यात्रा मे साधक कें 'ला' (विहीन) केर कटार सँ सज्जित रहबाक चाही, भौतिक इच्छा सभक संहार करबाक चाही।

'सम्पति सँ नहि, आत्म विस्मृति सँ
ओकरा भेटलथिन प्रियतम'

अपन आत्माक समस्त आकांक्षा आ हृदयक वेदना शाह ससुई मे ढारि देलनि। ओकर विघ्न-विपत्ति सभ लेल पाँच सँ कम सुर नहि लगाओल गेल। आन नायिका सभ कें एक-एक टा सुर भेटलनि। ससुई सुख-सुविधाक वातावरण मे पोसलि सुकोमल जीव छलि। भंभोरक एक धनिक धोविक कन्या। केचक राजकुमार पुन्हूँ व्यापारिक उद्देश्य सँ भम्भोर आएल छल। ओकरा ससुई सँ प्रेम भए गेलै। वेश वदलि कए ओ साधारण टहलू जकाँ ओकरा वापक काज करए लागल। एक राति जखन ओ मदमत्त भेल सूतल छल ओकर भाए सभ ओकरा ऊँट पर लादि कए लए गेल। ससुई भिनसरे जखन जागलि, पुन्हूँ कें नहि देखलक। अपन प्रियतम कें गमा कए ओ वताहि भए गेलि। अपन घर छोड़ि दुर्गम पहाड़ी दर्रा आ मरुभूमि सभ वाटे जाए अपन 'जीवन', 'आत्मा' 'सर्वस्व' कें आपस अनवा लेल विदा भेल।

सुर देसी मे शाह कहैत छथि—'अनन्त अन्वेषणक कला ओ भरिसक कैथेक हरिण वा हुमा सँ सिखने छल, ई दूनू विराम नहि जनैत अछि। एहेन दुर्गम पथक यात्रा करब कोनो साधारण जीव लेल संभव नहि अछि। ससुई सन हरिजन प्रियतम लेल दारुण कष्ट सहैत आ प्रभु नाम सँ बलिदान होइत अमरत्व प्राप्त करैत अछि। 'जीवन ग्रंथ' मे हुनका सभक नाम युग-युग धरि स्थायी रूप सँ अंकित रहैत अछि।

मरुभूमिक एक साधारण खोपड़ी मे जनमल रहितहुँ मारुई नारी जाति लेल सत्य आ शीलक ज्योति-स्तंभ थिक। ओ कहैछ :

'अहाँक महल हृदय हमर झमारि देलक।
ओकर कोठरी सभ दोखड़ि देलक॥
सभ सँ वेसी वियोग माए-वापक
अहँक महलक झरोखा सँ बेसी
वस बूझू जे हमरा मारि देलक।'

पुनश्च :

'हे उमर अहाँ लेल ईद थिक जे
शोक संताप थिक हमरा ले।
सभटा सुख भोग माए बाप छोड़लनि
मलीर वासी मारु हमरा स्नेह मे
बलिदान भेल अछि।'

गामक इनार लग सँ राजा उमर ओकरा जबर्दस्ती उठाकए अमरकोटक अपन राजमहल मे बन्दिनी बना लेने छल। सुख विलासमय जीवन ओ नहि गछलक। थरी ऊनक अपन गुदरी भेल कम्बल ओ नहि फेरलक जे मरु कन्या सभ ओकरा

नैतिकताकें भंग करबाक उलहन देतै, ओकरा आचरण सँ सभ दिन लजाइत रहत :

'अपन गुदरी भेल कम्बल पर चेफरी लगबैछ
ओकर प्रेम तेहन जोरगर छै;
गुदरी कें सीबैत थकैत नहि अछि
लोक ई नहि कहओ, 'मरुबाला सभक लाज गमौलक।'

ओकरा लेल अपन सखी सभक संग महलक विलास सँ नीक छलै :

'रहब भुखलो मुखें सखी सभ केर संग,
थिक आनन्द ओकरा सभक साथ संग।'

शाहक 'सुर मारुई' मे विश्वक सभ सँ हृदय-संवेद्य देशभक्तिपरक पद सभ अछि। मारुई देशभक्त सभ लेल आदर्श थिक। अपन जन्मभूमिक धूरा ओकरा लेल उच्च कोटिक मृगमद वा अतर थिक :

'अपन जन्मभूमिक धूरा कें हम कस्तूरी बूझै छी।'

अपन जन्मभूमिक समदिआक पैर ओ आँखिक पल सँ झड़बा लेल प्रस्तुत अछि। ओ उमर सँ प्रार्थना करैत अछि, मृत्युक बाद ओकर शव कें थरक लता सभक रस मे बोरि ओकर जन्मभूमिक बालु मे गाड़ल जाए—तखन मृत्यु ओकरा लेल नव जीवन हेतै।

'अपन जन्मभूमि लेल तरसैत हम जौं एतहि मरि जाइ;
हे राजा ! माए बापक निवास लग हमर कब्र बनि जाए;
हमर अवशेष मे मरु लता रस सानि
जौं पठा देल जाए मलीर
मृत्यु बनतै हमर नव जीवन।'

मारुई-जकाँ नूरी सेहो सर्वहारा अछि। ओकर जन्म मलाहक खोपड़ी मे भेलै। निर्धन परिवार मे जन्म ओकर नियति छलै, मुदा ओ रमणी रत्न छलि—नम्रताक गहना सँ सजाओल अपूर्व सौन्दर्य। राजा जाम तमाची कें ओकरा देखितहिं प्रेम भए गेलनि आ ओकरा अपन पटरानी बना लेलनि।

तमाची नूरी कें ओकर नम्रता लेल प्रेम करैत छथि, तहिना प्रभु ओकरे प्रेम करैत छथि जे विनीत आ निर्धन अछि।

'मलाहिन केर मन मे नहि छलै अभिमानक लेश
ओकरा आँखि मे जे कोमलता से राजा कें लगलनि वेस
ओकर आकर्षक संकोच राजाक हृदय लेलक जीति।'

मूमल आ ओकर सखी सभक सौन्दर्य वर्णनातीत अछि, ओकर सभक पसाहनि मानवीय भाषा मे व्यक्त नहि कैल जा सकैछ। दामी कलात्मक गहना सभ सँ ओ सभ अपन आकर्षण बढ़ा लैत छल। ओ सभ देह मे इत्र आ अबीर लगैत छल। ओ मानवीय पाटल सभ पात सन हरिअर शाल ओढ़ैत छल जकर मादक आँखि मे

काँट-सन दृष्टि छलै ।

मूमलक आँखि मे जे कुड़हरि से राजा सभकें दोखरि दैत छल । काक नदीक कछेड़ पर काक महल लग कन्न सभक पतिआनी छलै ।

'मूमलक आँखि मे कुड़हरि छलै
जे राजा-महाराजा के कटैत छलै
काक तट पर ओकर सभ केर कन्न छै ।'

ओकर आँखि प्रेमी सभक हृदयक आरपार तेना होइत छलै जेना सीसा कें हीरा कटैत अछि ।

'मूमल केर आँखि मे जादू केर हीरा छै
अछि काटैत सभक हृदय एक दृष्टि मे

अन्त मे राणो अपन तीक्ष्ण बुद्धि सँ काक केर विघ्न सभ पार कए ओकरा प्राप्त करैत अछि । लगले वियोग होइत छै । राणो एक राति समय पर नहि आएल । डेरूक मूमल भरसाहा लेल अपन बहिन सूमल कें अपना लग सुता लेलक । राणो आबि कए देखलक जे मूमल लग आन केओ सूतल छै । अत्यंत व्यथित भए ओ विदा भेल, ओकर छड़ी ओतहि छूटि गेलै । ताहि दिन सँ ओ मूमल सँ फराक रहल । ओना मूमल बड़ गौरवाहि छलि किन्तु राणोक विरह मे ओ काँट-काँट भए गेलि । ओ सांसारिक सुख-विलास सभ छोड़ि देलक ।

'हे राणा ! एहि कोठरी सभ कें देखि
हमर आँखि डबडबाइत अछि
ओछाओन पर पड़ल अछि धूरा
ई महल, प्रसून-कुंज, मृगमद लसित उद्यान
अहाँ बिनु सभ अछि मुरझाएल ।'

ओकर नरगिसी आँखि अपन आभा गमा देलक आ शुष्क भए गेल ।—

'व्यथा हमर आँखि कें सुखा देलक'
रहए नहि देलक नोर

अपन गलती सँ मूमल कें जीवन भरि वियोग सहए पड़लै, तहिना हरिजन सँ एकटा गलती भेल आ प्रभु सभ दिन लेल नकारि दैत छथि ।

मूमल-जकाँ लीला राज परिवारक आकर्षक आ सुन्नरि रमणी अछि । ओ चनेसरक रानी थिक । बहिकिरनीक वेष मे राजकुमारी कौरू ओकरा सँ एक राति चनेसर लग सूतए देबाक अनुरोध करैत अछि, जाहि लेल ओ अनमोल हीरा सभक हार देतै । लोभ मे आबि लीला सभ दिन लेल चनेसर कें गमा दैत अछि । राणा जकाँ चनेसर बड़ भावुक अछि, लीलाक छुतहरपन जानि ओकर आत्म-सम्मान विद्रोह कए दैत छै । ओ लीला सँ फराक भए जाइछ, लीला पछताइत अछि, विनती करैत अछि ।

'हम हार आ गहना सभ आगि मे धए देबै
भेटथु स्वामी हमर, हम आनन्दित हैब ।'

पुनश्च :

'आई स्वामी ! अहाँक सोझा गहना आगि मे झोंकब'

जे एक वेर प्रभुक भक्ति दए संसारक चमकैत वस्तु लेल दौड़ैत अछि, ओ प्रभु कृपा तहिना गमा दैत अछि जेना लीला चनेसर गमा देलक ।

'चनेसर लग ककरो छिनरपन नहि चलतै
हम बुझलौं नहि थिक ई
प्रदर्शनस्थली ।'
'एहि दुआरि पर हरिजन सभ नोर झहरबैछ ।'

सुहनीक बिआह डम सँ भेलै, मुदा ओकरा साहिर वा मेहार सँ प्रेम छलै । ओ चरवाहक वेष मे राजकुमार छल जे पछाति योगी भए धारक दोसर कछेड़ मे बैसए लागल । केहनो मौसम मे सभ राति सुहनी माटिक घैल पर धार मे हेलैत अपन प्रेमी लग जाइत छल । ओकर ननदि एक राति पाकल घैलक स्थान पर काँच घैल राखि देलकै । घैल भसकि गेलै, सुहनी डूबि गेल आ प्रेम लेल बलिदान भेल । ओकर प्रेमी सेहो धार मे कुदलै, मृत्यु मे दूनूक मिलन भेलै ।

'साहिर बिना सुहनी असक जीव छल
साहिरक दर्शने छल औषधि जकर ।
प्रियतम कें देखैत रहबे छलै
सुहनी लेल स्वास्थ्यकर ।।'

प्रेमक रहस्यमय सागर सुहनी कें तेहन बना देने छलै ओ सभटा विघ्न-बाधा टारि गेल । ओ महासागर हजार मायावी सागर कें जीतैत अछि । प्रियतम लेल पियासल कें सागर की थिक ?

मृत्यु ओहुना होइतै, प्रेम पथ मे मरि कए ओ अमर भेलि । एहि पथ मे जे मरैत अछि तकर नाम-यश अक्षय होइत छै—दूनू लोक मे ओ युग-युग धरि जीबैत अछि ।

'अतल मे नहि धसितै, के नाम सुनितै ?
मृत्यु देबै करितै, एना मरि कए अमर भए गेल ।'

संदर्भ ग्रन्थ

रिसालो'क विशिष्ट संस्करण

1. डॉ० अर्नेष्ट ट्रम्पक संस्करण, 1866
2. दीवान ताराचन्द शौकीरामक संस्करण, 1900, वम्बई सरकारक शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित
3. मिर्जा कलीच वेगक संस्करण, 1913
4. डॉ० एच० एम० गुरवख्शाणीक संस्करण, खंड 1, 1923; खंड-2, 1924, खंड 3, 1931 (खंड 4 अप्रकाशित)
5. गुलाम मुहम्मद शाहवाणीक संस्करण, 1950
6. कल्याण अडवाणीक संस्करण, 1958। हिन्दुस्तान किताव घर, बम्बई द्वारा प्रकाशित
7. आइ०आइ० काजीक संस्करण, 1961, सिन्धी अदवी बोर्ड कराची द्वारा प्रकाशित
8. कल्याण आडवाणीक संस्करण (मुजमल) 1966, श्रीमती देवी सी० वासवाणी द्वारा प्रकाशित (साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1968)

अंग्रेजी पोथी

1. सिगमा (ऋषि दयाराम गिदूमल), समथिंग एबाउट सिंध, 1882
2. लीलाराम सिंह बतनमल, शाह लतीफक जीवन, धर्म आ काव्य 1889
3. एम०एम० गिदवाणी, शाह अब्दुल लतीफ, 1922
4. जेठमल परसराम, सिंध एंड इट्स सूफीज, 1924
5. एच० टी० सोरले, शाह अब्दुल लतीफ ऑफ भिट, 1944, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस प्रकाशित
6. सी० ए० ० माड़ीवाला, शाह अब्दुल लतीफ ऑफ भिट एंड दी कामर्स ऑफ सिन्ध (हिस्टोरिकल सोसायटी मे पठित प्रबंध)
7. गुरदयाल मल्लिक, डिवाइन ड्वेलर्स इन दि डेजर्ट, 1949
8. टी०एल० वासवाणी (साधु), दी सोल ऑफ सिन्धी लिटरेचर, 1954
9. बाँके विहारी, सूफीज, मिस्टिक्स एंड योगीज ऑफ इंडिया, 1962, भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित।

11715
9·12·04

सिन्धी कविगण मे सभ सँ बेसी सम्मान आ प्रेम प्राप्त शाह लतीफ संसार के एकटा एहन अग्र-गण्य कवि छथि, जे जाहि भाषा मे रचना करैत छथि वा लिखैत छथि तकर श्रेष्ठ राष्ट्रीय कविक रूप मे सम्मानित आ अर्चित होइत छथि। शाह लतीफ एकटा विशिष्ट आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि वला सूफी, माटिक एहेन कवि छथि, जे अपन काव्य मे जन्मभूमिक दृश्य आ स्वर कें ओहि आकर्षक लोक-कथा सभकें, जे आइ धरि सिन्धक गाम मे आ कोनो वर्ग, देश आ धर्मक सिन्धीक जतए जुटान होइत अछि गाओल जाइत अछि, अमर बना देलनि।

एहि पोथीक लेखक प्रोफेसर कल्याण वू० आडवाणी शाह लतीफ विषयक मान्य विद्वान छथि। हुनक 'शाह-जो-रिसालो मुजमल' कें 1968 मे सिन्धीक साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल।

Library IIAS, Shimla
MT 891.410 92 Sh 13 A
00117150

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00